इकाई 3
यूरोप में पुनर्जागरण एवं रिफोरमेशन आन्दोलन तथा औद्यौगिक क्रान्ति

1. यूरोप में पुनर्जागरण

यूरोप का मध्यकाल प्राचीन रोम और यूनान की समृद्ध संस्कृति की विलुप्ति का काल था। सर्वत्र निराशा और उत्साह हीनता व्याप्त हो गयी। मनुष्य के मस्तिष्क पर रूढ़िवादी चर्च का आवरण छा गया। बौद्धिक विकास अवरूद्ध हो गया। 15वीं शताब्दी में शनैः शनैः मानव की मनोदशा में चेतना का उदय हुआ। इस नवचेतना के अभ्युदय को पुनर्जागरण कहा गया। तर्क शक्ति के उदय ने मनुष्य में अपने जीवन के प्रति दृष्टिकोण में परिवर्तन किया, तथा चर्च के रुढ़िवाद, सामन्तीय शोषण, शासकीय अराजकता और अज्ञान जनित आलस्य की जकड़न को तिलांजलि देकर स्वछन्द वातावरण में श्वास लेना प्रारम्भ किया।

यूनान और रोम की प्राचीन युग की सभ्यता की समाप्ति से ही यूरोप में मध्ययुग प्रारम्भ हो चुका था। वहाँ के मानव मस्तिष्क पर रूढिवादी परम्पराओं का आवरण छा गया था। यूरोप में चारों ओर उदासीनता एवं निराशा का वातावरण फैल गया था। लेकिन 13वीं से 16वीं शताब्दी के मध्य कुछ ऐसी विशिष्ट परिस्थितियाँ पैदा हुई जिन्होंने मनुष्य को चेतनायुक्त बनाया। यही चेतना पुनर्जागरण कहलाती है। इस चेतना युक्त मानव ने इस काल में उन आदर्शों तथा मूल्यों को महत्व दिया जो मध्यकाल में नगण्य समझे जाते थे। जैसे लौकिक जगत के प्रति आस्था, मानववाद का विकास, रूढ़िवादिता के स्थान पर तर्क की महत्ता, प्राकृतिक सौन्दर्य की अनुभूति पुनर्जागरण काल में महत्वपूर्ण हो गयी।

पुनजार्गरण काल– सामान्यतः 1350 ईस्वी से 1550 ईस्वी के मध्य माना जाता है। इस काल में सांस्कृतिक एवं बौद्धिक क्षेत्र में आए परिवर्तन दिखाई देने लगे। अंधविश्वास के स्थान पर वैज्ञानिक दृष्टि, मजहबी संकीर्णता के स्थान पर मानसिक स्वतन्त्रता तथा आत्मनिर्भर कला और साहित्य की मजहब से मुक्ति तथा प्रादेशिक भाषाओं का विकास संभव हो सका।

पुनर्जागरण का अर्थ :– पुनर्जागरण के लिए यूरोप में प्रयुक्त शब्द "रेनेसाँ" फ्रेंच भाषा का है जिसका प्रथम प्रयोग इटली के "वैसारी" ने 16 वीं शताब्दी में स्थापत्य एवं मूर्तिकला में आये क्रांतिकारी परिवर्तनों के लिए किया। 18वीं शताब्दी में फ्रांसीसी विद्वान "दिदरों" ने भी कला एवं साहित्य के नव सृजन हेतु रेनेसाँ शब्द का उपयोग किया था। हेनरी एस. लुकस के अनुसार, "पुनर्जागरण से तात्पर्य मध्यकालीन विचारों के तरीकों में परिवर्तन से है जो 13वीं शती के बाद इटली में विकसित हुए उन सांस्कृतिक परिवर्तनों से है जो 1600 ईस्वी तक यूरोप के अन्य भागों में फैले थे।'' प्रोफेसर डेविड के शब्दों में "पुर्नजागरण शब्द मानव के स्वतन्त्रता प्रिय और साहसपूर्ण विचारों को अभिव्यक्त करता है जो मध्ययुगों में मजहबी प्रमुखों के यहाँ कैद थे।" जे.ई.सैन के अनुसार ''पुनर्जागरण शब्द ऐसा शब्द है जो उत्तर मध्यकाल और आधुनिक काल के समस्त मानसिक परिवर्तनों को सामूहिक रूप से व्यक्त करता है। इसमें भूतकाल के प्रति अभिरूचि एवं वर्तमान को आत्मसात् करने के लिए बौद्धिक चेतना उपस्थित थी।'' पुनर्जागरण की व्याख्या करते हुये फ्रांस के इतिहासकार जूलन मिसीलेट दो ऐसे व्यापक आयामों की ओर संकेत करते हैं जिनमें पुनर्जागरण के सुधारवादी समग्र प्रयत्न आ जाते हैं। ये दो आयाम हैं "दुनिया की खोज और मनुष्य की खोज"। दुनिया की खोज से तात्पर्य पन्द्रहवीं एवं सोलहवीं शताब्दी की उन भोगोलिक उपलब्धियों से है जिन्होने अटलांटिक, प्रशांत एवं हिन्द महासागर को व्यापार के लिए खोला और पुरानी दुनिया के लोगों को अमेरीका की नई दुनिया तथा दक्षिणी अफ्रीका व आस्ट्रेलिया का परिचय कराया। मनुष्य की खोज के अन्तर्गत मानव शक्ति के उस पक्ष को लिया गया , जिसके द्वारा उसने मध्यकालीन पोपशाही को अस्वीकार किया तथा विकसित एवं स्वतंत्र दृष्टि का अवलम्बन किया।

सेबाइन के शब्दो में "पुनर्जागरण एक सामुहिक अभिव्यक्ति है जिसका प्रयोग मध्यकाल के अन्त और आधुनिक युग के आरम्भ के समय दृष्टिगोचर सभी बौद्धिक परिर्वतनों के लिए किया गया।'' पुनर्जागरण को परिभाषित करते हुए इतिहासकार फिशर ने लिखा है कि "मानवतावादी आन्दोलन का प्रारम्भ मजहब के क्षेत्र में नवीन दृष्टिकोण, स्थापत्य एवं चित्रकला का नया स्वरूप, व्यक्तिवादी सिद्धान्तों का विकास, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और छापे खाने का अविष्कार इत्यादि विशेषताओं को सामूहिक रूप में सांस्कृतिक नवजागरण कहते हैं।"

उपर्युक्त विद्वानों के विचारों से यही स्पष्ट होता है कि पुनर्जागरण एक ऐसा बौद्धिक एवं उदार सांस्कृतिक आन्दोलन था जिसमें मनुष्य मध्यकालीन बन्धनों से मुक्त होकर स्वतंत्र चिन्तन की ओर अग्रसर हुआ था। व्यापक अर्थ में पुनर्जागरण प्राचीन के पुनरोदय तक ही सीमित नहीं रहा बल्कि वर्तमान में हुए परिवर्तनों को भी इसमें सम्मिलित कर लिया गया, जिसमें तर्क, जिज्ञासा और शिक्षा के द्वारा ज्ञान विज्ञान, कृषि, उद्योग कला साहित्य एवं संस्कृति के क्षेत्र में हुई चहुँमुखी प्रगति को पुनर्जागरण कहा जा सकता है।

पुनर्जागरण की जन्म स्थली इटली :– पुनर्जागरण की नवीन विचार धारा का प्रारम्भ इटली से ही शुरू हुआ। इटली से पुनर्जागरण के प्रारम्भ होने के कई कारण रहे। इतिहासविदों की मान्यता है कि इटली में प्राचीन रोम साम्राज्य की महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ धुंधले रूप से नजर आ रही थी और ज्ञान प्राप्त करने की प्राचीन परम्परा पूर्ण रूप से अवरूद्व नहीं हुई थी। अनेक व्यक्ति कला और साहित्य को संरक्षण दे रहे थे। इटली से पुनर्जागरण के प्रारम्भ होने के प्रमुख कारण निम्नलिखित रहे–

1. **विदेशी व्यापार का प्रमुख केन्द्र :–** इटली की भौगोलिक स्थिति भूमध्य सागरीय देशों में सबसे अनुकूल स्थिति थी जिससे अरब और एशिया के व्यापारियों द्वारा लाया गया माल अधिकांश इटली में ही बिकता था और यहीं से एशिया की वस्तुएँ यूरोपीय देशों में व्यापार के लिए जाती थी जिससे इटली एक प्रसिद्व व्यापारिक केन्द्र के रूप में प्रसिद्व हुआ। इस विदेशी व्यापार से इटली में एक समृद्ध मध्यमवर्ग का उदय हुआ। यह मध्यमवर्ग मजहबी नियंत्रणों की उपेक्षा करने लगा।

2. **समृद्ध नगरों की स्थापना :–** इटली विदेशी व्यापारियों की गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र होने से नेपल्स, फ्लोरेन्स, मिलान, वेनिस जैसे समृद्ध नगरों की स्थापना हुई जिससे इन नगरों में निवास करने वाले लोगों के रहन–सहन, खान–पान, सभ्यता और संस्कृति उच्च कोटि की हुई। जिसने पुनर्जागरण की प्रेरणा दी।

3. **समृद्ध मध्यम वर्ग का उदय :–** इटली व्यापार का प्रमुख केन्द्र होने के कारण समृद्ध मध्यम वर्ग का उदय हुआ। यह व्यापारी वर्ग इतना शक्तिशाली हो गया कि उसने सामन्तों एवं पोप की परवाह नहीं की और मध्य कालीन मान्यताओं को नहीं माना, इससे इटली में पुनजार्गरण की नवीन प्रवृत्ति का संचार हुआ।

4. **पूर्व की समृद्ध संस्कृति से सम्पर्क :–** पूर्वी देशों के व्यापारी इटली में कुछ समय के लिए प्रवास करते थे एवं इटली के व्यापारी एशिया के विभिन्न देशों में व्यापार के लिए जाते थे। एशिया के लोगों के रहन–सहन, धर्म सभ्यता एवं संस्कृति की समृद्धता ने उन्हें आकर्षित किया। यूरोप के अज्ञान एवं धार्मिक रूढिवादिता की तुलना समृद्ध पूर्वी देशों से किया जाना स्वभाविक था। इसी तुलना ने इटली में पुनर्जागरण की प्रवृत्ति को सशक्त आधार प्रदान किया।

5. **इटली प्राचीन रोमन सभ्यता की जन्म स्थली :–** इटली के नगरों में मौजूद प्राचीन सभ्यता के बहुत से स्मारक अभी भी लोगों को गत वैभव की याद दिलाते थे। प्राचीन रोम जैसी महत्ता तथा अपने देश को पुनः गौरवशाली बनाने का विचार लोगों के मन में छाया हुआ था। इसी विचार ने इटली को पुनर्जागरण का केन्द्र बिन्दु बना दिया।

6 **कुस्तुन्तुनिया के पतन पर विद्वानों का इटली में आश्रय लेना:–** यूरोप के प्रवेश द्वार कुस्तुन्तुनिया पर 1453 ई. में तुर्कों के अधिकार हो जाने के कारण यूनानी विद्वान, कलाकार और व्यापारी इटली आकर बस गये। यह विद्वान अपने साथ प्राचीन यूनानी साहित्य भी साथ लेकर के आये। इनमें निहित ज्ञान से यूरोप अभी अनभिज्ञ था। इस साहित्य के अतुल ज्ञान विज्ञान एवं विचार पद्धति ने यूरोप को जागृत कर दिया।

7. **शिक्षा के स्वरूप में परिवर्तन :–** मध्ययुग में शिक्षा मजहब से विशेष प्रभावित व केन्द्रित थी। इटली में व्यापार और आर्थिक समृद्धि के कारण शिक्षा के नये स्वरूप की

आवश्यकता हुई। इसमें भौगोलिक ज्ञान, व्यवसायिक ज्ञान, विज्ञान, मानवोपयोगी तथा तर्क युक्त विषयों को समुचित स्थान दिया गया। ऐसी शिक्षा ने इटली में पुनर्जागरण का आधार बना दिया।

पुनर्जागरण की विशेषताएँ

(1). पुनर्जागरण ने मध्ययुगीन मजहब और परम्पराओं के नियंत्रण से मुक्त होकर तर्क एवं चिन्तन की विचार–धारा को बढावा दिया।

(2). पुनर्जागरण में मानव जीवन के महत्व को स्वीकार किया गया।

(3). प्रादेशिक भाषाओं एवं लौकिक साहित्य का विकास हुआ।

(4). नवीन भौगोलिक खोज हुई।

(5). विचारों की पुष्टि के लिए नवीन प्रयोग पर बल दिया गया। जिससे मानव उपयोगी वैज्ञानिक अन्वेषण हुए।

(6). सहज सौन्दर्य की उपासना, पुनर्जागरण की विशेषता रही।

यूरोप में पुनर्जागरण के कारण :–

पुनर्जागरण यूरोप के अनेक देशों में अलग–अलग समय पर धीरे–धीरे हो रही घटनाओं का प्रभाव था। ये घटनाएँ इस प्रकार थी–

1. **क्रुसेडः–** ईसाइयों व मुस्लिमों के पवित्र तीर्थ स्थल जेरूशलम को लेकर 11वीं शताब्दी से 13वीं शताब्दी के मध्य मुस्लिम जगत (सैल्जुक तुर्को) व ईसाई जगत के मध्य होने वाले युद्धों को क्रुसेड कहा गया। क्रूसेड के कारण यूरोप वासियों का पूर्व के लोगों से सम्पर्क हुआ। उन्होंने पूर्व के लोगों की उच्च सभ्यता एवं संस्कृति को निकटता से देखा। अरब लोगों ने यूनान तथा भारतीय सभ्यता के सम्पर्क से अपनी सभ्यता को विकसित कर लिया था। अरब लोगों के सम्पर्क ने यूरोपीय लोगों को मजहब पर आधारित जीवन पद्धति में परिवर्तन हेतु प्रेरित किया। इन युद्धों ने यात्राओं तथा भौगोलिक अध्ययन को प्रोत्साहित किया। क्रूसेड में भाग लेने वाले लोग पूर्वी लोगों से मिले और उनसे नये विचार ग्रहण करने का अवसर मिला तथा नवीन एवं प्रगतिशील ज्ञान का बोध हुआ। हिन्दू अंक, बीज गणित, दिशा दिग्दर्शन यंत्र, कागज बारूद आदि का ज्ञान यूरोप पहुँचा। जो लोग युद्ध से लौटकर यूरोप पहुँचे उन्हें अपने संकीर्ण जीवन से अरूचि हो गई। यूरोप के लोगों को यह विश्वास था कि व्यक्ति की लौकिक और अलौकिक जीवन की सभी आवश्यकताएँ ईसाईयत के द्वारा पूरी हो सकती है। लेकिन पूर्वी सभ्यता के सम्पर्क में आने से नवीन अनुभव प्राप्त करके लौटने वाले लोगों ने इस विश्वास का खण्डन किया। जिससे लोगों के मस्तिष्क पर चर्च का अत्यधिक प्रभाव, निर्बल पड़ने लगा। इस प्रकार पूर्व से प्राप्त नवीन विचार ने यूरोप में पुनर्जागरण को संम्भव बनाया।

2. **व्यापारिक समृद्धिः–** पुनर्जागरण का सबसे बडा कारण व्यापार का विस्तार था। क्रूसेड के बाद यूरोप के पूर्वी देशों के साथ व्यापार सम्बन्ध स्थापित हुए। यूरोप के व्यापारी अधिक लाभ प्राप्त करने के लिए जेरूशलम, एशिया माईनर होते हुए पूर्वी देशों की ओर आने लगे। चर्च प्रतिबंधित जलमार्गो का उपयोग किया जाने लगा, जिससे व्यापार में काफी वृद्धि हुई। इस कारण से नये शहरों का उदय हुआ और उनका महत्व बढने लगा। यूरोप के ये नगर अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारिक केन्द्र बनने लगे, जिससे यहाँ से निरन्तर विभिन्न देशों के व्यापारियों एवं यात्रियों का आना जाना बना रहा। इसके कारण विचारों का आदान–प्रदान हुआ और ज्ञान के विकास में सहायता मिली। इन नगरों के स्वतन्त्र वातावरण ने स्वतन्त्रता को प्रोत्साहन दिया। अब लोग चर्च और चर्च से संबंधित संस्थाओं को सन्देह की दृष्टि से देखने लगे। उसकी अच्छाई और बुराई के बारे में वाद विवाद करने लगे, जिससे विचार–स्वतंत्रता बढी और ज्ञान की प्रगति हुई। इस भावना ने पुनर्जागरण के विकास को गति प्रदान की तथा व्यापार की समृद्धि के कारण यूरोप में एक नये समृद्ध वर्ग का जन्म हुआ। इस समृद्ध वर्ग ने धन को विद्या अध्ययन में लगाया। मध्य युग के आरम्भ में विद्या अर्जन का अवसर केवल पादरियों को ही मिलता था। लेकिन अब जन साधारण को भी अवसर मिलने लगा। इस नये समृद्ध वर्ग ने कला और संस्कृति के उत्साहियों को प्रश्रय दिया। जिससे कला और साहित्य के क्षेत्र में उच्च कोटि का सृजन एवं विज्ञान के क्षेत्र में अनेक खोजें प्रारम्भ हुई।

3. **कागज और मुद्रण यंत्र का अविष्कार :–** यूरोप वासियों

ने कागज बनाने की कला मध्यकाल में अरब वासियों के माध्यम से सीखी। 15वीं शताब्दी के मध्य में जर्मनी के जोहन्नेस "गुटेनवर्ग" नामक व्यक्ति ने एक टाईप मशीन बना दी। इस मुद्रण यंत्र के आविष्कार में बौद्धिक विकास का मार्ग खोल दिया। 1477 ई. में "कैक्सटन" ने ब्रिटेन में छापाखाने की स्थापना की। इस छापाखाने के आविष्कार से प्राचीन यूनानी व रोमन साहित्य का प्रसार एवं नवीन विचारों का यूरोप के जन–जन तक पहुँचाना अब सरल हो गया। ज्ञान पर वर्ग विशेष का एकाधिकार समाप्त हो गया। "पुस्तकों में ऐसा लिखा है'' कह कर अब सामान्यजन को गुमराह नहीं किया जा सकता था क्योंकि अब आवश्यकता पड़ने पर सामान्यजन स्वयं पढ़ सकता था । इससे यूरोप के लोगों में आत्म विश्वास जागृत हुआ। ज्ञान के प्रसार से अन्धविश्वास व रूढ़ियाँ कमजोर पड़ने लगी तथा व्यक्ति की बौद्धिक लालसा को शांत करने का मार्ग प्रशस्त हुआ। इस प्रकार कागज एवं मुद्रण यंत्र पुनर्जागरण के प्रसार में महत्वपूर्ण कारक सिद्ध हुए।

4.कुस्तुन्तुनिया पर तुर्कों का अधिकार :– तुर्कों ने पूर्व रोमन साम्राज्य की राजधानी कुस्तुन्तुनिया पर 1453 ई. में अधिकार कर लिया। कुस्तुन्तुनिया पर तुर्कों का अधिकार हो जाने से यूरोप से भारत आदि पूर्वी देशों के साथ होने वाला व्यापारिक स्थल मार्ग बन्द हो गया। यूरोप में पूर्वी देशों की विलासिता की वस्तुओं व मसालों की अत्यधिक मांग थी। यूरोप वासी नवीन वैकल्पिक मार्गों की खोज, सम्भवतः जल मार्ग की खोज करने लगे जिससे अमेरिका, भारत एवं पूर्वी द्वीपों के मार्ग ढूंढे गए। कुस्तुन्तुनिया पिछले 200 वर्षों से यूनानी सभ्यता एवं संस्कृति, दर्शन, कला का महान् केन्द्र रहा था। तुर्कों की विजय के पश्चात् यूनानी विद्वान, कलाकार, दार्शनिक अपनी आजीविका उपार्जन एवं सुरक्षा हेतु , यूरोप में इटली, फ्रांस, जर्मनी, इंग्लैण्ड आदि देशों में चले गए और जाते समय अपने साथ प्राचीन रोम एवं यूनान का ज्ञान, विज्ञान तथा नई चिन्तन पद्धति अपने साथ ले गए। अकेला कार्डिनियल बेसारियो 800 पाण्डुलिपियों के साथ इटली पहुँचा था। यूनान एवं रोम की संस्कृतियों में परस्पर समन्वय स्थापित हुआ जिससे पुनर्जागरण का उदय हुआ।

5. मानवतावाद का विकास :– पुनर्जागरण का अन्य मुख्य कारण मानवतावाद माना जाता है। मध्यकाल में मानवतावादी लेखकों की चर्च के स्थान पर, जीते जागते मनुष्य और उनकी खुशियों व गमों में दिलचस्पी थी। मानवतावादियों की समझ में जीवन का लक्ष्य या सर्वोपरि सुख, ईश्वर की सेवा करना या सैनिक कारनामा कर दिखाना नहीं , बल्कि लोगों की भलाई करने के लिए काम करना था। अब लोगों के चिन्तन का केन्द्र बिन्दु मनुष्य बन गया था तथा मानवतावादियों ने जनता को सुसंस्कृत बनाने के लिए प्राचीन रोमन ओर यूनानी साहित्य पर जोर दिया। पैट्रार्क को मानवतावाद का जनक माना जाता है। उसने अंधविश्वासों एवं पादरियों की जीवन प्रणाली की खिल्ली उड़ाई।

6. मंगोल साम्राज्य का उदय :– विशाल मंगोल साम्राज्य के उदय से एशिया और यूरोप के बीच सम्पर्क स्थापित होने से भी पुनर्जागरण को बडी प्रेरणा मिली। कुबलई खां का दरबार विद्वानों, मजहबी प्रचारकों एवं व्यापारियों का केन्द्र रहा। मंगोल दरबार में पोप के दूत, भारत के बौद्ध भिक्षु, पेरिस, इटली तथा चीन के दस्तकारों, कुस्तुन्तुनिया और आर्मीनिया के व्यापारियों, सबका सम्पर्क फारस में भारत के गणित और ज्योतिष शास्त्रियों के साथ होता था, परस्पर विचार–विनिमय होने से विद्वानों को बड़ा लाभ हुआ। वेनिस यात्री मार्कोपोलो, कुबलाई खां के दरबार में 1272 में गया था। वहाँ से लौटकर अपने यात्रा वृतांत में उसने मंगोल साम्राज्य की समृद्धि के बारे में लिखा। उसके यात्रा वृतांत ने यूरोपवासियों के मानस को लम्बे समय तक उद्वेलित किया।

पुनर्जागरण का प्रभाव :– पुनर्जागरण काल में पुराने से सामंजस्य कर नवीन के निर्माण की शुरूआत हुई, जिसने साहित्य, कला एवं विज्ञान ही नहीं मानव जीवन के हर पहलू को प्रभावित किया। पुनर्जागरण का प्रभाव सम्पूर्ण यूरोप में एक जैसा नहीं था। इसकी गति व व्यापकता में क्षेत्रगत स्थिति के अनुरुप अन्तर रहा। इटली की तुलना में यूरोप के उत्तरी देशों में चित्रकारी, मूर्तिकला और स्थापत्य ने कम महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। इसके विपरीत उत्तरी यूरोपीय देशों में मानवतावादी दर्शन और साहित्य ने अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। यद्यपि उत्तरी देशों का मानवतावाद इटली से ही लिया गया था, लेकिन उसका

स्वरूप भिन्न था। जहाँ इतालवी मानवतावाद ईसाई आदर्शों के विरूद्ध लौकिकता के खुले विद्रोह का प्रतीक था, वहीं उत्तरी देशों के मानवतावाद ने ईसाईयत को मानवीय बनाने का प्रयास किया ।

यूरोप में पुनर्जागरण के प्रमुख प्रभाव निम्नलिखित थे–

1.साहित्य के क्षेत्र में :– पुनर्जागरण काल से पहले यूरोप में साहित्य का सृजन केवल लैटिन भाषा एवं यूनानी भाषा में होता था। देशी व क्षेत्रीय भाषाएँ असभ्य मानी जाती थी। किन्तु पुनर्जागरण काल में साहित्य का सृजन, अध्ययन–अध्यापन, फ्रेंच, स्पेनिश, पुर्तगाली, जर्मन, अंग्रेजी, डच, स्विडिस आदि क्षेत्रीय भाषाओं का विकास हुआ। मध्यकालीन साहित्य की मुख्य विषय वस्तु चर्च था पुनर्जागरण काल साहित्य में मजहबी विषयों के स्थान पर मनुष्य के जीवन और उसके कार्यकलाप को महत्व दिया गया। अब साहित्य आलोचना प्रधान, मानवता प्रधान, और व्यक्तिवादी हो गया। इटली के फ्लोरेंस निवासी दांते (1265–1321) को पुनर्जागरण का अग्रदूत कहा जाता है। दांते की विश्वविख्यात रचना "डिवाईन कामेडी" है। जिसमें ईसाई कहानियों एवं मजहबी शास्त्रों की चर्चा है। दांते की दूसरी रचना "डि मोनार्किया" है जो राजनैतिक पुस्तक है, जिसमें वह पवित्र रोमन स्राामाज्य के नेतृत्व में इटली के एकीकरण की बात करता है। दांते की एक अन्य रचना "बितानोओ" है जो प्रेम गीत संग्रह है। फ्रोसंस्को पैट्रार्क (1321–1374 ई.) ने स्थानीय भाषा टक्सन में प्रेम गीत लिखे है। पैट्रार्क मानवतावादी के रूप में पुनर्जागरण का प्रतिनिधित्व करने वाला प्रथम व्यक्ति था, इसलिए उसे "मानवतावाद का जनक'' कहा जाता है। पैट्रार्क के शिष्य बोकेसियो की सबसे श्रेष्ठ रचना "डेकोमेरोन" है इसमें एक सौ कहानियों का संग्रह है। दूसरी रचना "जीनियोलोजी ऑफ गोड्स" है। फ्रांस में पुनर्जागरण साहित्य रचना रेबेलेस ओर मान्टेन की है। रेबेलेस की रचना "पांतागुवेल" और ''गारगेंतुआ'' वैचारिक और साहित्यक धरातल पर एक ताजी हवा की तरह सिद्ध हुई, जिसमें सांस लेकर फ्रांस को नई स्फूर्ति मिली इसीलिए उसकी पहली पुस्तक को "नया सन्देश" कहा जाता है। अंग्रेजी साहित्य के पुनर्जागरण कालीन कवि जाफरे चौसर (1340–1400 ई.) को अंग्रेजी काव्य का पिता कहा जाता है। उसकी कृति "कैन्टरबरी टैल्स" है जिसमें उसने पहली बार "सैक्सन बोली" का कलात्मक प्रयोग किया। इसी से विकसित होकर राष्ट्रीय भाषा अंग्रेजी का उदय हुआ। चौसर की रचनाओं में सांसारिक चीजों, मनुष्य की कमजोरियों और उसके स्वभाव का वर्णन है।

चौसर के बाद सर टामसमूर (1478–1535) ने अपनी कृति "यूटोपिया" में एक आदर्शवादी समाज की कल्पना की है। इसमें अपने समय के जन–जीवन में व्याप्त सामाजिक बुराईयों और आर्थिक दोषों का निरूपण किया गया है। पुनर्जागरण की ब्रिटेन को सबसे बड़ी देन विलियम शेक्सपियर (1564–1616) है जिसको एक महान कवि एवं नाटककार माना जाता है। उसके नाटक उस द्वन्द्व को प्रस्तुत करते हैं जो सामंती और मध्यमवर्गी समाज के मध्य पैदा हो गया था। इसके प्रमुख नाटकों में "मर्चेन्ट ऑफ वेनिस" "रोमियो जूलियट", ''हेमलेट'', ''मेकबेथ'' आदि प्रमुख है। अन्य अंग्रेजी साहित्यकार एडमंड स्पेंसर का '' फेयरी क्वीन '' और क्रिस्टोफर मार्लो का '' तैमूरलंग ग्रेट '' एड वर्ड '' ,'' द ज्यु ऑफ माल्टा '' और डा. फॉस्टस'' जैसी कृतियों में राष्ट्रवाद, व्यापार के विस्तार और भौतिकवाद की छवि दिखाई दी। हालैण्ड के इरैस्मस की कृति ''मूखर्ता की प्रशंसा'' (इन द प्रेज ऑफ फॉली) तथा स्पेन के सरवेन्टीज ने डान क्विग्जोट की रचना की जिसमें उस युग के सामन्ती जीवन पर व्यंग्य है। राजनीतिक चिन्तन के क्षेत्र में फ्रांस के मार्सिग्लियों की कृति ''डिफन्डर ऑफ पीस'' में पोप के राजनीतिक हस्तक्षेप को गलत बताया गया। मैकियावेली (1469–1527) की ''द प्रिंस'' में वर्णन हैं कि चिन्तन मजहब से परे है। इसमें स्पष्ट शब्दों में राज्य के मजहब निरपेक्षीकरण की बात की गई है मैकियावेली ने राजनीति के कुछ ऐसे सिद्वान्त प्रतिपादित किए, जिनके कारण उसे आधुनिक चाणक्य कहा जाता है।

2. कला पर प्रभाव :– इस काल में कला के हर क्षेत्र में पुरानी परम्परा को त्याग कर एक नई और स्वतन्त्र शैली का विकास हुआ। पुनर्जागरण काल के चित्रकारों ने मजहबी विषय वस्तु को नहीं छोड़ा और मुख्यतः ईसा और मरियम से संबंधित विषय–वस्तु को ही चित्रित किया, लेकिन उन चित्रों का प्रस्तुतीकरण मानवीय और लौकिक था। प्लास्टर

और लकड़ी के फलक (पैनल) के स्थान पर कैनवास का इस्तेमाल शुरू हुआ, तेल चित्रों की परम्परा शुरू हुई। इस काल में लियोनार्डो द विंची एक चित्रकार और मूर्तिकार के अतिरिक्त वैज्ञानिक, गणितज्ञ, इंजिनियर, और संगीतकार व दार्शनिक भी था, जिसके चित्रों में 'लास्ट सपर' और 'मोनालिसा' अनुपम है।

लास्ट सपर में ईसा मसीह और उसके अनुयायी केवल व्यक्ति नहीं बल्कि विभिन्न जीवन मूल्यों के प्रतिनिधि लगते हैं मोनालिसा केवल किसी सुन्दर स्त्री का चित्र नहीं है, बल्कि उस साधारण सी दिखाई पड़ने वाली महिला की रहस्यमय मुस्कान का अर्थ आज भी दर्शकों के लिए रहस्यमय बना हुआ है।

'वर्जिन ऑफ रॉक्स' में लियोनार्डो ने वर्जिन मेरी और शिशु ईसा की सुंदरता एवं लावण्य का चित्रण किया है। माइकेल एंजेलो मूर्तिकार एवं चित्रकार था जो मनुष्य को ईश्वर की दैवी शक्ति और प्रभुता की सबसे सुन्दर अभिव्यक्ति समझता था। माइकेल एंजेलो ने पोप के वेटिकन में स्थित सिसटाइन चैपल की छत को उसने बाइबिल की , सृष्टि से प्रलय तक की कथाओं को अमर बना दिया। उसके सबसे महान चित्र 'लास्ट जजमेंट' को देखने से पता चलता है कि मनुष्य भय और आतंक से ग्रस्त है तथा ईश्वर के प्रेम और दया की कोई आशा नहीं है। राफेल द्वारा निर्मित 'मेडोना' का दिव्य नारीत्व का चित्रांकन सजीवता और सुन्दरता के कारण संसार के अत्यन्त प्रसिद्ध चित्रों में गिना जाता है। बैसेलो टिसियन ने सामन्तों और सम्राट परिवार की महिलाओं के अनेक पोर्ट्रेट बनाये। इसका 'दस्ताने पहने हुए आदमी' का चित्र प्रमुख एवं आकर्षक है। पुनर्जागरण कालीन मूर्तिकला, मजहब के बन्धन से मुक्त होकर बृहत्तर संदर्भों में जुड़ी। इस काल के प्रमुख मूर्तिकारों में लोरेंजो गिबेर्ती, दोनातेल्लो और माइकेल एंजलो प्रमुख है। गिबेर्ती ने फ्लोरेंस के गिरजाघर के सुन्दर दरवाजों को निर्मित किया। इन पर ओल्ड टेस्टामेंन्ट में वर्णित दृश्यों का अंकन है। माइकेल एंजेलो ने इनकी प्रशंसा करते हुए कहा कि ये स्वर्ग के द्वार पर रखे जाने योग्य हैं। दोनातेल्लो की 15 फीट उँची ''पेता'' की मूर्ति प्रसिद्ध हुई । पुनर्जागरण कालीन स्थापत्य कला में प्राचीन यूनान और रोम शैली का समन्वय स्थापित हुआ। इस स्थापत्य को यूनान से स्तम्भ और क्षैतिज रेखाएँ, रोम से गुम्बद मेहराब और विशालता प्राप्त हुई। इसका उदाहरण फ्लॉरेंस का कैथेड्रल और संत पीटर का गिरजाघर है।

3. विज्ञान के क्षेत्र में प्रभाव :– पुनर्जागरण का विज्ञान पर भी प्रभाव पड़ा। पुनर्जागरण ने मनुष्य को मजहबी नियन्त्रण से मुक्त करके स्वतन्त्र रूप से विचार करने का अवसर दिया। नवीन दृष्टिकोण ने मानव मन में प्रकृति के रहस्य को जानने की जिज्ञासा को जन्म दिया। फ्रांसिस बेकन ने वैज्ञानिक दृष्टि कोण का वर्णन करते हुए कहा ''ज्ञान की प्राप्ति प्रेक्षण और प्रयोग करने से ही हो सकती है।'' 16 वीं शताब्दी से तो यूरोप में वैज्ञानिक फ्रान्ति का युग आ गया। पौलेण्ड के वैज्ञानिक कोपरनिकस ने बताया कि पृथ्वी एक उपग्रह है जो सूर्य के चारो और घूमती है। इटली के वैज्ञानिक ब्रूनों ने कोपरनिकस के सिद्वान्त का अनुमोदन किया। इस प्रतिपादन को बाइबिल के विरुद्ध मानकर रोम के पादरियों ने उसे जिन्दा जला दिया। जर्मन खगोल शास्त्री जॉन कैपलर ने कोपरनिकस के सिद्धान्तों की गणितीय प्रमाणों द्वारा पुष्टि की। इंग्लैण्ड के वैज्ञानिक और गणितज्ञ आइजक न्यूटन के ''गुरूत्वाकर्षण के सिद्वान्त'' ने

विश्व में हलचल पैदा कर दी। अब यह स्पष्ट हो गया कि सम्पूर्ण विश्व सुव्यवस्थित नियमों के अनुसार चल रहा है, न कि देव शक्ति से। फ्रांसीसी गणितज्ञ एवं दार्शनिक देकार्ते ने बीज गणित का ज्यामिती में प्रयोग करना सिखाया और इटली वासी गैलीलियो (1564–1642) ने पेण्डुलम के सिद्वान्त, वायु मापन यन्त्र और दूरबीन का आविष्कार किया।

4. मानवतावाद :– पुनर्जागरण से सबसे अधिक प्रभावित मनुष्य का दृष्टिकोण हुआ। अब मनुष्य की दिलचस्पी ईश्वर में न होकर मनुष्य में हो गई। मानवतावादी चिन्तकों ने मजहबी ग्रंथों के वैराग्य और आध्यात्मिकता को तिलांजली देकर सौन्दर्य ,माधुर्य, मानव प्रेम और भौतिक सुखों को जीवन का सार स्वीकार किया।

पुनर्जागरण के परिणाम –:

1.अभिव्यक्ति भावना का विकास :– पुनर्जागरण ने मनुष्य को अपनी बात को कहने–सुनने के लिए स्वतंत्र कर दिया था। अब वह सम्राट या पोप के आदेशों के अनुसार कार्य करने के लिए बाध्य नहीं था। वह अपने विचारों की व्यक्तिगत रूप से किसी भी प्रकार से अभिव्यक्ति कर सकता था।

2.भौतिकवादी दृष्टिकोण का विकासः– पुनर्जागरण ने मनुष्य को भौतिकवादी बना दिया। मध्य कालीन मजहब केन्द्रित सभ्यता को आधुनिक मानव केन्द्रित सभ्यता बना दिया। अब मनुष्य ने परलोक के नाम पर त्याग करना छोड़ दिया। अपने भौतिक जीवन की सुख की ओर ध्यान दिया। पुनर्जागरण कालीन वैज्ञानिकों विद्वानों, साहित्यकारों और कलाकारों ने मानव संसार को सुन्दर और समृद्ध बनाने की बात कही। जनता को जीवन और जग का सम्बंध समझ में आ गया साथ ही मनुष्य को भौतिक जीवन का महत्व ध्यान में आ गया। वैज्ञानिक आविष्कारों द्वारा प्रकृति पर विजय तथा भौगोलिक खोज मनुष्य का लक्ष्य बन गया।

3.वैज्ञानिक दृष्टि कोण का विकास :– पुनर्जागरण ने पुराने मजहबी संस्थानों विचारों तथा परम्पराओं को झकझोर दिया। मध्य काल में मानव मस्तिष्क पर मजहब का जो विशेष प्रभाव था, उसे पुनर्जागरण ने दूर किया तथा निकट भविष्य में होने वाले सुधारों के लिए बाध्य किया। इस वैज्ञानिक दृष्टि कोण व तार्किक विवेचन ने प्राचीन मजहबी ग्रन्थों में चली आ रही परम्पराओं और सिद्वान्तों को हिला के रख दिया। बौद्धिक दृष्टि कोण के विकास ने ईसाई मजहब के विश्वासों और प्रचलनों की परीक्षा तर्क की कसौटी पर की।

4.पुरातन के प्रति मोह भंग होनाः– यूरोप में मध्यकाल के लोगों को पुरातन ज्ञान में कोई रूचि नहीं रही थी।

5.राष्ट्रीयता का विकास :– पुनर्जागरण ने चर्च और पोप की सत्ता के प्रभाव में कमी आने से लोगों में राष्ट्रीयता की भावना का विकास हुआ। राष्ट्रीय भावना ने लोगों की अपने राष्ट्र की शक्ति के विकास में रूचि बढ़ाई।

2. यूरोप में रिफोरमेशन (सुधार) आन्दोलन

सोलहवीं शताब्दी से पूर्व मध्यकालीन यूरोप का समाज चर्च के बन्धनों में जकड़ा हुआ था। मनुष्य जन्म से लेकर मृत्यु तक चर्च के प्रभाव में रहता था। ईसाई चर्च का संगठित तंत्र रोम से संचालित था। पादरियों को असीमित विशेषाधिकार प्राप्त थे। इन पादरियों के विशेषाधिकार का विरोध करने की कल्पना, सामान्य जन तो क्या राजा भी नहीं कर सकता था। पुनर्जागरण से सामन्तवाद और उससे जुड़ी आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक तथा बौद्धिक मान्यताएँ टूट रही थी। छापेखाने के आविष्कार ने स्थानीय भाषाओं के विकास और लेखकों की लेखनी को गति दी। बौद्धिक चेतना से उत्पन्न नयी चिन्तन–धारा ने मजहबी अन्धविश्वासों और कुप्रथाओं की जड़ को झकझोर दिया। मध्यमवर्ग और वाणिज्य व्यापार के उदय तथा राष्ट्रीय राज्य के उत्कर्ष और तर्क पर आधारित ज्ञान विस्तार ने ईसाईयत और चर्च में सुधारवादी परिवर्तन आवश्यक कर दिये। मानवतावादी साहित्यकारों ने मजहब और चर्च की प्रचलित मान्यता पर गहरा प्रहार किया।

रिफोरमेशन (सुधार) आन्दोलन का अर्थ :– सोलहवीं शताब्दी में पुनर्जागरण से प्रभावित लोगों ने पोप की सांसारिकता व प्रभुत्व के विरूद्व और चर्च की कुरीतियों, आडम्बरों, पाखण्डों तथा शोषण को समाप्त करने के लिए जो आन्दोलन आरम्भ किया उसे रिफोरमेशन आन्दोलन कहा गया। डेविस के अनुसार, रिफोरमेशन पुनर्जागरण से निकट रूप से संबंधित वह महान् मजहबी आन्दोलन है जो कि रिफोरमेशन आन्दोलन के नाम से विख्यात है।" सेबाइन लिखते

है कि रिफोरमेशन या सुधार आन्दोलन "सर्वव्यापी चर्च के एकाधिकार पर आक्रमण किया, जो मध्ययुग की सबसे बड़ी समस्याओं में से एक थी।" हेज ने लिखा है कि "विवेक की जागृति के परिणाम स्वरूप बहुसंख्यक ईसाई, कैथोलिक चर्च के आडम्बरों के कटु आलोचक हो गए थे। वे चर्च नामक संस्था में परिवर्तन चाहते थे। इसी सुधारवादी प्रयास के परिणाम स्वरूप जो मजहबी उथल–पुथल हुई और जिसके कारण ईसाईयत के नवीन सम्प्रदाय अस्तित्व में आये, इसी को रिलिजियस रिफोरमेशन (मजहबी सुधार) कहते हैं। सारांशतः रिफोरमेशन आन्दोलन प्रत्यक्षतः तो ईसाई लोगों के नैतिक, आध्यात्मिक जीवन को ऊँचा उठाने तथा पोप के व्यापक अधिकारों के विरूद्ध हुए विद्रोह की दृष्टि से राजनैतिक व मजहबी आन्दोलन था, लेकिन इसमें आर्थिक, बौद्धिक और सामाजिक पक्ष भी सम्मिलित थे।

3. रिफोरमेशन (सुधार)आन्दोलन के कारण :–

1.पुनर्जागरण का प्रभाव :– मध्यकाल यूरोप पुनर्जागरण के कारण धर्म बन्धनों से मुक्त हो गया। बौद्धिक चेतना ने स्वतन्त्र चिन्तन शक्ति प्रदान की। प्रचलित अन्ध विश्वास और परम्पराओं को तर्क की कसौटी पर कसने लगे। मजहब के सात्विक स्वरूप को जाना और चर्च और पादरी पर निर्भरता को समाप्त किया। प्रगतिवादी साहित्य सृजन और मानवतावाद के उदय ने मनुष्य का सीधा ईश्वर के साथ संबंध स्थापित कर दिया। पुनर्जागरण के कारण चर्च की मध्यस्थता का परित्याग तथा अज्ञानता के आवरण को हटाकर यूरोप के लोगों ने मजहबी सुधार आन्दोलन शुरू किया।

2.चर्च के अन्तर्गत व्याप्त बुराईयाँ :– मजहबी सुधार आन्दोलन का प्रमुख कारण चर्च में आई बुराइयाँ थी। पादरियों की अज्ञानता और विलासता ने चर्च के पदों की बिक्री भ्शुरु कर दी तथा अपने सम्बन्धियों के बीच चर्च के लाभकारी पदों को बांटना भ्शुरु कर दिया। पोप, पादरी तथा चर्च के पदाधिकारी प्रतिबन्ध मुक्त, भ्रष्ट और विलासी जीवन जी रहे थे। चर्च के अधिकारियों पर किसी भी राजा का कानून लागू नहीं होता था। पोप स्वयं को सम्पूर्ण ईसाई जगत का सम्राट और मजहबी प्रमुख मानता था। इसके प्रतिनिधि "लिमेंट एवं नन सिमस" राज्यों पर नियन्त्रण रखते थे। "एक्स कम्यूनिकेश" नामक विशेषाधिकार से किसी भी राजा को मजहब व पद से हटाया जा सकता था। "इन्टरडिक्ट" नामक विशेषाधिकार से किसी राज्य के चर्च को बन्द किया जा सकता था। राजा और प्रजा दोनों ही चर्च से भयभीत रहते थे।

3. आर्थिक कारण :– आर्थिक कारणों ने मजहबी सुधार आन्दोलन में उल्लेखनीय भूमिका अदा की। राजाओं को सेना एवं प्रशासन का खर्चा चलाने के लिए अधिक धन की आवश्यकता थी, परन्तु पादरियों द्वारा वसूल किया गया कर रोम चला जाता था तथा पादरी धनी होने के साथ ही कर देने से मुक्त थे। राजा चाहते थे कि राज्य का शासन चलाने के लिए चर्च पर टैक्स लगाया जाए।

4.मध्यम वर्ग की महत्वाकांक्षा :– पुनर्जागरण से पूर्व यूरोप के लोगों का जीवन चर्च और सामन्तों द्वारा नियंत्रित था। पुनर्जागरण काल में व्यापार के विकास और राष्ट्रीय राज्यों के उदय से यूरोप में एक नवीन मध्यम वर्ग का उदय हुआ, जो पूंजी निवेश द्वारा अपनी शर्तों पर उत्पादन कराने को तत्पर था। इस नए वर्ग ने स्वयं द्वारा अर्जित धन से ऐश्वर्य का जीवन बिताने की चाह में चर्च के प्रतिबन्ध से मुक्ति हेतु प्रयत्न शुरू किए। इस वर्ग ने रोजगार के नये साधन प्रदान कर दयनीय कृषकों तथा श्रमिकों को अपनी ओर आकृष्ट किया। अब वे चर्च और सामन्तवर्ग पर निर्भर नहीं रहे। यह नवीन वर्ग चर्च में एकत्रित अतुल सम्पत्ति का विरोध करता था। इस मध्यम वर्ग ने चर्च विरूद्व समुद्री यात्रा और ब्याज का लेन–देन शुरू कर दिया। मध्यम वर्ग द्वारा शासकों को अधिक कर देने के कारण राजकीय संरक्षण प्राप्त हुआ। इस प्रकार इस मध्यम वर्ग ने अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति करने के लिए प्रचलित रूढिवादी परम्पराओं के विरूद्ध विद्रोह कर मजहबी सुधार आन्दोलन को गति प्रदान की।

5. वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास :– यूरोप का ईसाई समाज अपने को आजन्म चर्च और चर्च के अधिकारियों के पूर्ण प्रभाव में रहना ही अपनी नियति समझता था चर्च संबंधी विषयों पर तर्क करना पाप करना समझता था। प्रयोग और परीक्षण की नवीन वैज्ञानिक पद्धति ने सृष्टि व मानवोत्पत्ति की रूढिवादी सोच को नकार दिया। "अरस्तु" का चिन्तन कि, ''सृष्टि की प्रत्येक वस्तु वायु, जल, और अग्नि का परिणाम है,' पुनः मान्य होने लगा। "कोपरनिकस" का सिद्वान्त कि पृथ्वी अपनी कक्षा में

सूर्य का चक्कर लगाती है'' मान्य हुआ। मजहबी मान्यताओं के विरूद्ध इन विचारों को विद्रोही कहा गया और इन्हें दबाने के प्रयास किये गए। किन्तु दमन के प्रयास प्रभावशाली न हो सके।

6.पोप का राजनीति में हस्तक्षेप :– मध्यकाल में यूरोप में पोप ने असीमित सत्ता प्राप्त कर राजा तथा राज्य को गौण बना दिया था। पोप को विशेष दैवीय अधिकार प्राप्त थे। इन अधिकारों से पोप अपने को शासकीय व्यवस्था तथा कानून से ऊपर समझता था। सम्प्रभु पोप अपनी शक्तियों का दुरूपयोग करने और राजा के राजनैतिक कार्यों में ही नहीं, व्यक्तिगत जीवन में भी हस्तक्षेप करने लगा। चर्च का न्यायालय राजा के न्यायालय के निर्णयों को रद्द करने लगा। राजा और जन सामान्य इस दोहरी एवं विरोधाभासी व्यवस्था से दुःखी हो गए। पोप और राजा की व्यवस्था में टकराव होने लगा। पुनर्जागरण के बाद राष्ट्रीय शक्ति सम्पन्न राजा पोप के अनुचित राजनैतिक अधिकारों को स्वीकार करने को तैयार नहीं थे। राजा चाहते थे कि राष्ट्र के अन्दर रहने वाले सभी व्यक्ति और सारी संस्थाओं की श्रद्दा और भक्ति राष्ट्र के प्रति हो। रोम का पोप सभी देशों के चर्च संगठनों का प्रधान था। लेकिन राजा अब पोप द्वारा पादरियों की नियुक्ति के अधिकार को चुनौती देने लगे। पोप का दावा था कि वह प्रत्येक देश के आन्तरिक मामलों में दखल दे सकता है। इसलिए चर्च राजा का राजनीतिक प्रतिद्वन्द्वी भी था। इन कारणों से राजा चर्च के प्रभुत्व और उसके प्रधान पोप का विरोधी था। यूरोप के बहुत से ऐसे राजा थे जो रिफोरमेशन आन्दोलन के समर्थक थे।

6.बौद्धिक प्रकिया :– यूरोप के प्रबुद्ध बुद्धिवादी लोगों में चर्च के अनैतिक, भ्रष्ट एवं विलासितापूर्ण जीवन के विरूद्ध प्रतिक्रिया होने लगी कि ''पोप या पादरी जो स्वयं पतित और पापी है, पापों से मुक्ति कैसे दिला सकता है ?'' भौतिकवादी, मानवतावादी और सुधारवादी बौद्धिक विचारक अपने तर्कों से इसका विरोध करने लगे। भौतिकवादी विचारक चर्च के प्रति पूर्ण श्रद्धा और भक्तिभाव से मुक्ति चाहते थे। पादरी इरबर्ट को नैतिक एवं सात्विक जीवन यापन का आह्वान करने पर दण्ड दिया गया। दाते, लोरेन्जो, बोकेसिओ आदि मानवतावादी चिन्तक जीवन के सुख को चर्च से अधिक महत्व देते थे। सुधारवादी चर्च में व्याप्त दुर्व्यवस्था और पुरोहितों के जीवन चरित्र में सुधार लाना चाहते थे। इनमें मार्टिन लूथर, जॉन वाई क्लिक एवं जॉन हंस जैसे सुधारक थे। इन्होंने चर्च व पादरियों की कटु आलोचना की और मूल मजहबी पुस्तक (बाइबिल) को ही मजहब का सच्चा पथ– प्रदर्शक घोषित किया। बाइबिल की सात्विक व्याख्या प्रस्तुत की। पोप ने उन्हें मजहब विरोधी घोषित किया प्रतिक्रियास्वरुप यूरोप में मजहबी क्रान्ति उत्पन्न हुई।

7.तत्कालीन कारण :– सुधार (रिफोरमेशन) आन्दोलन की शुरूआत क्षमापत्रों के बिक्री का मार्टिन लूथर द्वारा विरोध से मानी जाती है। धन की लालसा चर्च के अधिकारियों को इतनी बढ़ गई कि चर्च के ठेकेदारों ने मुक्ति का व्यापार शुरू कर दिया। पोप लियो दशम् ने पाप मोचन पत्र बनवाये जिन्हें खरीद कर कोई भी ईसाई अपने पापों से मुक्ति प्राप्त कर सकता था। धनवान लोग अनैतिक तरीके से कमाये धन से इन क्षमा पत्रों को खरीद लेते थे। आर्क बिशप "अलवर्ट" को पोप ने यह कार्य सौंपा, जिसने एक पादरी "टेटजेल" को इन क्षमापत्रों की बिक्री हेतु अधिकृत किया। इन्हें खरीदने वालों को बिना पश्चाताप (कन्फेशन) के पाप से मुक्ति की गारन्टी दी जाती थी। 1517 ई. में पादरी टेटजेल जर्मनी के "विटनवर्ग" पहुँचा जहाँ मार्टिन लूथर ने इसे क्षमापत्रों की बिक्री करते देखा तथा भारी विरोध किया। पोप ने मार्टिन लूथर को पंथ बहिष्कृत कर दिया। इस घटना से ही रोमन कैथोलिक पंथ के विरूद्व आन्दोलन प्रारम्भ हो गया। सोलहवीं शताब्दी के अन्त तक चर्च के विरूद्व पांथिक, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, बौद्धिक असन्तोष चरम सीमा तक पहुँच चुका था। विद्रोह के लिए सिर्फ एक चिंगारी की आवश्यकता थी जो क्षमापत्रों की बिक्री ने पूरी कर दी।

प्रमुख सुधारक

1. जॉन वाईक्लिफ (1320–1384) :– आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में कार्यरत थे। ईसाई चर्च के आडम्बरों एवं भ्रष्ट तंत्र की आलोचना करते हुए घोषणा की कि पोप पृथ्वी पर ईश्वर का प्रतिनिधि नहीं है तथा विवेकहीन पादरियों के मजहबी उपदेश निरर्थक है। प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं मूल बाइबिल का अध्ययन करना चाहिए और तद्नुसार आचरण करना चाहिए। उन्होंने कहा कि जन भाषाओं में बाइबिल का अनुवाद करना चाहिए। चर्चो के पास पड़ी अपार धन सम्पदा पर राज्य को अधिकार कर लेने की वकालत की। जॉन वाई क्लिफ के

प्रगतिवादी विचारों को परम्परावादी सहन नहीं कर पाए। उसे पदच्युत कर दिया गया तथा उसे पाखण्डी घोषित किया गया। उसके विचारों ने जनता पर छाप छोड़ी और उसे "द मार्निंग स्टार ऑफ रिफोर्मेशन" कहा गया। उसके अनुयायी "लोलार्ड्स" कहलाए।

2. **जॉन हँस (1369–1415 ई.) :–** बोहेमिया नगर का निवासी था और वाईक्लिफ के विचारों से प्रभावित था। प्राग विश्व विद्यालय में प्रोफेसर था। उसका विचार था कि एक सामान्य ईसाई को बाईबिल के अध्ययन से मुक्ति मिल सकती है और इसके लिए उसे चर्च जाने की आवश्यकता नहीं है। उसने पोप के आदेशों को न मानने का आह्वान किया। जॉन हँस को चर्च और मजहब की निन्दा करने वाला तथा नास्तिक घोषित कर जिन्दा जलवा दिया गया।
3. **सेवानरोला–(1452–1488 ई.) :–** फ्लोरेन्स निवासी सात्विक जीवन जीने वाला विद्वान पादरी था। इसने पोप द्वारा सांसारिक भोग विलास युक्त जीवन जीने की आलोचना की। सेवानरोला का मानना था कि पादरियों को सरल, सादा, पंथनिष्ठ जीवन जीना चाहिए। पोप अलेक्जेण्डर षष्ठम् ने उसे चर्च तथा पादरियों के जीवन की निंदा करने से रोकने का आदेश दिया। पोप के आदेशों की अवहेलना करने पर उसे ईसाई परिषद् के समक्ष बुलाकर प्राण दण्ड दिया और जीवित अग्नि को समर्पित कर दिया।
4. **इरेस्मस (1466–1536 ई.):–** हालैण्ड निवासी प्रसिद्ध मानवतावादी लेखक, उच्चकोटि का विद्वान एवं विचारक था। इरेस्मस को लेखन शैली की प्रभावोत्पादकता के कारण शीघ्र ही लोकप्रियता प्राप्त हो गई। उसने 1511 ई. में "मूर्खता की प्रशंसा" (इन प्रेज ऑफ फॉली) नामक पुस्तक लिखी। इस पुस्तक में उसने व्यंग्यपूर्ण शैली में पादरियों की अज्ञानता एवं उनके पाखण्डों की कटुआलोचना की। 1516 ई. में उसने "न्यू टेस्टामेन्ट" का नवीन संस्करण प्रकाशित कराया जिसमें ईसाइयत के मूल सिद्वान्तों की सात्विक व्याख्या की। द प्रेज ऑफ फॉली के बारे में कहा जाता है कि लूथर के क्रोध की अपेक्षा इरेस्मस के उपहासों ने पोप को अधिक हानि पहुँचाई।
5. **मार्टिन लूथर–(1483–1546 ई.):–** जर्मनी के एक साधारण किसान परिवार में 1483 ई. में जन्म लिया। उसके पिता उसे वकील बनाना चाहते थे। उस की रूचि मजहबी शास्त्रों के अध्ययन में थी। जब उसने विश्व विद्यालय में मजहबी शास्त्रों का अध्ययन शुरू किया, उसका मन उद्वेलित रहने लगा तथा आत्मा की शान्ति के लिए वह आगस्टीनियन भिक्षुओं में शामिल हो गया।

सन्त पॉल के पत्रों को पढ़ कर उसे ऐसा लगा कि मुक्ति का मार्ग अच्छे कर्म, संस्कार और कर्मकाण्ड नहीं, बल्कि ईसा में सरल आस्था है। दूसरे शब्दों में ईसा मसीह में अटूट विश्वास के द्वारा मनुष्य मुक्ति प्राप्त कर सकता हैं। जब वह विटनवर्ग में मजहबी शास्त्र का प्रोफेसर नियुक्त हुआ तो उसे और अध्ययन का मौका मिला। उसका विश्वास और अधिक बढ़ गया कि केवल आस्था और विश्वास से मुक्ति मिल सकती है। उसने अनुभव किया कि पूजा, प्रायश्चित, प्रार्थना, आध्यात्मिक ध्यान और क्षमा–प्रदान पत्रों की खरीद से पाप से मुक्ति नहीं मिल सकती है। अपनी मजहबी शंकाओं के निवारण के लिए

चित्र – मार्टिन लूथर

1511 ई. में वह रोम गया। रोम में पोप की वैभवशाली, पतित, निरंकुश और स्वेच्छाचारी जीवन शैली को देखकर वह अत्यन्त क्षुब्ध एवं निराश हुआ। अब उसके मस्तिष्क में विद्रोह की चिंगारी जल चुकी थी।

1517 ई. में उसे क्षमापत्रों की बिक्री करता हुआ, पोप लियो दशम् का अधिकृत प्रतिनिधि, टेटेजेल विटनवर्ग में मिला। इस कार्य को देखकर वह अत्यन्त व्यथित हुआ और उसने विटनबर्ग के कैसल चर्च के प्रवेश

द्वार पर क्षमापत्रों के विक्रय के विरोध में 95 मान्यताओं का विरोध पत्र लगा कर पोप के कार्य का विरोध किया। उसने दलील दी कि क्षमापत्रों के द्वारा व्यक्ति चर्च के लगाये दण्ड से तो मुक्त हो सकता है, किन्तु मृत्यु के पश्चात् वह ईश्वर के लगाये दण्ड से तो छुटकारा नहीं पा सकता, न अपने पाप के फल से बच सकता है। उसके विचारों ने तहलका मचा दिया। उसके समर्थकों की संख्या बढ़ने लगी। उसने कई पत्रक (पम्पलेट) लिखकर चर्च की कमजोरियों पर प्रहार किया, पोप के अधिकारों को चुनौती दी, चर्च की सम्पत्ति जब्त करने और चर्च पर नियंत्रण करने का आह्वान राजाओं से किया।

1519 ई. में "लिपजिंग" में पोप के प्रतिनिधि और लूथर के मध्य एक खुले वाद –विवाद में उसने ईश्वर और मनुष्य के बीच पोप को निरर्थक सिद्ध किया। उसने चर्च की कमजोरियों पर प्रहार किया। पोप के अधिकारों को चुनौती दी। अपने विचारों को जनता तक पहुंचाने के लिए उसने तीन पत्रक (पम्पलेट) प्रकाशित किए –

(I) जर्मन सामंत वर्ग को सम्बोधन – इस पत्रक में लूथर ने कहा कि ईसाई अधिकारी वर्ग में कुछ भी विशेष नहीं है। तुरन्त उनके विशेष अधिकार समाप्त होने चाहिए। उसने चर्च की अपार सम्पत्ति का अधिग्रहण करते हुए जर्मन शासकों को विदेशी प्रभुत्व से मुक्त होने की लिए कहा।

(ii) ईश्वर के चर्च की बैबीलोनियाई कैद :– इस पत्रक के द्वारा उसने पोप और उसकी व्यवस्था पर प्रहार किया।

(iii) ईसाई व्यक्ति की मुक्ति :– इसमें उसने मुक्ति के अपने सिद्धान्तों का उल्लेख किया। इसी समय उसने बाईबिल का जर्मन भाषा में अनुवाद किया।

पोप ने 1520 ई. में लूथर को दो माह में अपने प्रकाशित विचारों को रोकने व पूर्णतः खण्डन करने का आदेश दिया तथा कहा कि अन्यथा उसे पंथद्रोही घोशित कर दण्डित किया जाएगा। पोप के इस आदेश का लूथर ने सार्वजनिक सभा में दहन किया। पोप द्वारा उसे मजहब से बहिश्कृत कर दिया गया और उसकी हत्या हेतु ईसाई जनता को प्रोत्साहित किया। किंतु अनेक पोप विरोधी राजाओं ने लूथर की सहायता की और संरक्षण दिया। 1521 ई. की "वर्म्स" की सभा में पुनः लूथर को चर्च विरोधी प्रचार बंद करने को कहा गया। लूथर ने स्पष्ट घोषणा कि वह ऐसा तभी कर सकता है, यदि तर्क द्वारा उसके एक भी विचार को मजहब विरूद्ध सिद्ध कर दिया जाए। उसने कहा कि "पाप केवल पश्चाताप से नष्ट हो सकता है जो कि मन का विषय है, चर्च के आडम्बरों से उसका कोई लेना–देना नहीं है।''

इस समय जर्मनी में सामाजिक एवं मजहबी खलबली पैदा हो चुकी थी। दक्षिण–पूर्वी और मध्य जर्मनी के किसानों ने लूथर के उपदेशों से प्रेरणा लेकर विद्रोह कर दिया। शुरू में लूथर को इस आन्दोलन से सहानुभूति थी। लेकिन 1529 ई. के बाद आन्दोलन के जनवादी और हिंसक चरित्र से घबराकर उसने शासकों से आग्रह किया कि वे इस विद्रोह का दमन कर दें। वह यह जानता था कि यदि अशान्ति बढी तो उसके विचारों के प्रसार में अवरोध आ जाएगा और नेतृत्व उसके हाथ से निकल जाएगा। इसीलिए उसने जन विरोधी फैसला लिया। 1526 ई. में स्पीयर की प्रथम पांथिक सभा में मजहबी मतों का निराकरण करने का असफल प्रयास किया गया, जिसमें जर्मन शासक गण लूथरवाद तथा कैथोलिक समर्थक दलों में विभाजित हो गए।

1529 ई. में ही स्पीयर में दूसरी मजहबी सभा का आयोजन किया गया, किन्तु इस सभा ने भी सुधार आन्दोलन को मान्यता नहीं दी। इसके विपरीत रिफोरमेशन आन्दोलन के खिलाफ कई सख्त प्रस्ताव पारित किए गए। इन प्रस्तावों का लूथरवाद के समर्थक शासकों ने 19 अप्रैल 1529 ई. को औपचारिक विरोध किया। इस विरोध या प्रतिवाद (प्रोटेस्ट) के कारण लूथर के इस सुधार आन्दोलन को प्रोटेस्टेंट कहा गया। 1530 ई. में "आक्सवर्ग स्वीकृति" द्वारा प्रोटेस्टेंट वाद को सैद्धान्तिक स्वीकृति मिल गई। जर्मनी में 1546 ई. से 1555 ई. तक भीषण गृह युद्ध चलता रहा। जब चार्ल्स ने रक्तपात से तंग आकर सिंहासन त्याग दिया तो उसके उत्तराधिकारी सम्राट फर्डिनेण्ड ने प्रोटेस्टेण्टो से समझोते की नीति अपनाते हुए 1555 ई' में आंग्सबर्ग की सन्धि की। सन्धि के अनुसार :–

1.प्रत्येक शासक ने अपनी–अपनी प्रजा को पंथ चुनने की स्वतन्त्रता दी।

2.1552 ई. से पूर्व प्रोटेस्टेण्टो द्वारा चर्च की जो सम्पत्ति छीनी गई उसको मान्यता दे दी गई।

3.लूथरवाद के अलावा अन्य पंथ मजहब को मान्यता नहीं दी गई।

4.कैथोलिक बहुल क्षेत्रों में लूथरवादियों को मत परिवर्तन करने

के लिए बाध्य नहीं किया जायेगा।

5.कैथोलिक पादरियों को प्रोटेस्टेंट मत स्वीकार करने पर अपना धारितपद त्यागना होगा।

मार्टिन लूथर के विचार बहुत सुगम थे। उसने ईसा और बाईबिल की सत्ता स्वीकार की, लेकिन पोप और चर्च की दिव्यता और निरंकुशता को नकार दिया। चर्च द्वारा निर्धारित कर्मों के स्थान पर उसने आस्था को मुक्ति का साधन बताया। संस्कारों में उसने केवल तीन– नामकरण, प्रायश्चित और प्रसाद या पवित्र भोज (बप्टिज्म, पेंनेंस और यूख़ारिष्ट) को ही माना। चर्च में चमत्कारों को नहीं माना। उसने पोप, कार्डिनल और बिशप के पदानुक्रम को समाप्त करने की मांग की तथा सभी आस्थावानों की पुरोहिताई की घोषणा की। उसने राजाओं को चर्च का प्रधान माना। पादरियों के ब्रह्मचर्य पालन की अनिवार्यता को समाप्त करने का विचार दिया।

2. ज्विंगली (1484–1531) :– लूथर के समकालीन ज्विंगली का जन्म स्विट्जरलैण्ड के टोगेनबर्ग प्रान्त में 1484 ई. में हुआ। वह यथार्थवादी एवं मानववादी चिन्तक तथा प्राचीन साहित्य के प्रति गहन रूचि रखने वाला था। उसने पोप का सक्रिय विरोध किया और पवित्र बाईबिल को ही मनुष्य का एक मात्र निर्देशक घोषित किया। उसने इरेस्मस के मानवतावादी विचारों तथा लूथर के चर्च विरोधी विचारों के साथ समन्वय करके ईसाईयों के लिए सरल प्रार्थना की परम्परा का सूत्रपात किया। 1525 ई. में सुधारवादी चर्च (रिफार्म्ड चर्च) की स्थापना की। पवित्र भोज (यूखारिष्ट) के प्रश्न पर वह मार्टिन लूथर से भिन्न विचार रखता था। उसने शक्ति का प्रयोग कर कैथोलिकों को सुधारवादी चर्च मे सम्मिलित करने का प्रयास किया जिससे स्विट्जरलैण्ड में 1531 ई. में गृह युद्ध शुरू हो गया। इस गृह युद्ध में वह मारा गया। बाद में "केपल की संधि" हुई जिसके द्वारा वहां पर कैथोलिक व प्रोटेस्टेंट दोनों मतों को मान्यता मिल गई।

3.कॉल्विन (1509–1564 ई.) – काल्विन का जन्म 1509 ई. में फ्रांस में हुआ। प्रोटेस्टेण्ट मत की स्थापना में लूथर के बाद कॉल्विन का ही नाम आता है। कॉल्विन पहला सुधारक था, जो अटूट विश्वास के साथ, एक ऐसा पवित्र सम्प्रदाय स्थापित करना चाहता था जिसे अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता और ख्याति प्राप्त हो। कॉल्विन ने पेरिस विश्व विद्यालय में मजहबी साहित्य का गहरा अध्ययन किया। लूथर के विचारों को पढकर 24 वर्ष की उम्र में ही प्रोटेस्टेण्ट मत को अपना लिया तथा फ्रांस के रोमन कैथोलिक चर्च से संबंध तोड़ लिए। फ्रांस के रोमन कैथोलिक चर्च और फ्रांस की सरकार के क्रोध से बचने के लिए वह फ्रांस छोड़कर स्विजरलैण्ड चला गया और वहीं उसने ईसाईयत की स्थापनाऐं (इन्स्टीट्यूट्स ऑफ द क्रिश्चियन रिलीजन) नामक पुस्तक की रचना की। यह मजहबी पुस्तक बाद में प्रोटेस्टेंटवाद के इतिहास में सबसे प्रभावशाली ग्रंथ साबित हुई।

कॉल्विन के सिद्वान्तों का आधार ईश्वर की इच्छा की सर्वोच्चता है। ईश्वर की इच्छा से सब कुछ होता है, इसलिए मनुष्य की मुक्ति न कर्म से हो सकती है न आस्था से, वह केवल ईश्वर के अनुग्रह से ही हो सकती है व्यक्ति का जन्म होते ही यह निश्चित हो जाता है कि उसको मुक्ति मिलेगी या नहीं। इसे ही पूर्व में तय नियति का सिद्धान्त कहते हैं। इस सिद्धान्त से घोर भाग्यवादिता बढ़नी चाहिये थी, लेकिन काल्विन ने ठीक इसके विपरीत अपने अनुयायियों में एक नवीन उत्साह और दैविक प्रेरणा का संचार किया। कॉल्विन मत को मानने वालों में व्यापारी वर्ग अधिक था। 1536 ई. से अपनी मृत्यु 1564 ई. तक उसने अपना कार्य क्षेत्र जिनेवा को ही रखा। उसने इस काल में जिनेवा की मजहबी संस्थाओं का ही नहीं, बल्कि उसकी शिक्षा एवं स्वास्थ्य व्यवस्था तथा व्यापार का भी संचालन किया। काल्विनवाद का प्रचार स्विट्जरलैण्ड, डच, नीदरलैण्ड, स्कॉटलैण्ड और जर्मन पैलेटिनेट में हुआ। इंग्लैण्ड और फ्रांस में भी उसके अनुयायी थे।

4.ब्रिटेन में एंग्लीकनवाद :– ब्रिटेन में मजहबी सुधार आन्दोलन का नेतृत्व इंगलैण्ड के राजाओं द्वारा किया गया। शुरूआत हेनरी अष्टम के द्वारा राष्ट्रीय चर्च की स्थापना से हुई। हेनरी अपनी पत्नी कैथरीन के साथ विवाह को पोप से अमान्य घोषित करवाना चाहता था। पोप हेनरी के लिए यह कर तो सकता था, लेकिन उसे डर था कि कैथरीन के विवाह को अमान्य करने से उसका भतीजा सम्राट चार्ल्स पंचम नाराज हो जाएगा। सम्राट चार्ल्स पंचम से पोप डरता था, क्योंकि रोम की सुरक्षा सम्राट चार्ल्स पंचम की सेना करती थी और कैथरीन सम्राट चार्ल्स की बुआ थी। जब हेनरी ने पोप से यह कार्य करने को कहा तो उसने टाल दिया। तब हेनरी ने संसद से एक्ट ऑफ सुपरमेसी पास करवाया तथा स्वयं ब्रिटेन के

चर्च का सर्वोच्च अधिकारी बन गया। इस प्रकार ब्रिटेन ने रोमन चर्च से संबंध तोड़ लिए तथा ब्रिटेन के चर्च को एंग्लीकन चर्च का नाम दिया गया। पोप को वार्षिक कर भेजना बन्द कर दिया गया। हेनरी के उत्तराधिकारी एडवर्ड छठें के शासन काल में आंग्ल चर्च प्रोटेस्टेण्ट बन गया। कैमर ने बुक ऑफ कामन प्रेयर नामक पुस्तक प्रकाशित करवाई और प्रसिद्ध बयालीस सिद्धान्तों की घोषणा की। ब्रिटेन का यह रिफोरमेशन (सुधार) आन्दोलन एंग्लीकनवाद के नाम से प्रसिद्व हुआ।

रिफोरमेशन (सुधार) आन्दोलन के परिणाम :

1. **ईसाई रिलिजन (मजहब) का विभाजन :–** इस आन्दोलन का महत्वपूर्ण परिणाम यह हुआ कि सम्पूर्ण यूरोप में एक मात्र कैथोलिक चर्च की प्रभुसत्ता सदा के लिए समाप्त हो गई। अब यूरोप में प्रोटेस्टेण्ट वाद से प्रभावित ईसाई चर्चो की स्थापना होने लगी।
2. **प्रतिवादी सुधार आन्दोलन :–** पुनर्जागरण ने जो वातावरण तैयार किया उसमें कैथोलिक चर्च में सुधार के लिए वाईक्लिफ और हंस जैसे लोगों ने आवाज उठाई तो उन्हें दबा दिया गया और पोप तथा पादरी विलासिता में डूबे रहे। किन्तु जब लूथर और कॅाल्विन ने विद्रोह किया तो कैथोलिक चर्च के लिए जीवन – मरण का संकट पैदा हो गया। जब यूरोप में एक के बाद एक प्रोटेस्टेण्ट राज्य बनते जा रहे तो कैथोलिक चर्च को बचाने व प्रोटेस्टेण्ट आन्दोलन को रोकने के लिए कुछ सुधारात्मक उपाय किए गए। ये सुधारात्मक उपाय रिफोरमेशन आन्दोलन के प्रतिवाद (प्रतिक्रिया स्वरूप) में ही शुरू किये गए। अतः इसे (काउंटर रिफोर्मेशन) प्रतिवादी रिफोरमेशन कहते हैं। इस सुधार का उद्देश्य चर्च के संगठन और मजहबी सिद्धान्तों में आए दोषों को दूर करना व चर्च के अन्दर व्याप्त भ्रष्ट आचरणों को रोकना था।

ट्रेन्ट की सभा :– उत्तरी इटली के ट्रेन्ट नामक स्थान पर कैथोलिक पंथ सभा का आयोजन किया गया। इस सभा में ऐसे अनेक सुधारवादी चिन्तकों को बुलाया गया, जो कैथोलिक मजहबी सिद्धान्तों की सात्विक व्याख्या कर सकें। इस सभा में दो तरह के निर्णय लिए गए सिद्धान्तगत और सुधार संबंधी। चर्च के मूल सिद्धान्तों में कोई परिवर्तन स्वीकार नहीं किया गया। बाईबिल की व्याख्या का अधिकार केवल चर्च को ही दिया गया। सातों संस्कार अपरिवर्तनीय माने गए। मुक्ति का आधार चर्च के माध्यम से सम्पन्न कार्य बताये गए और चमत्कार में आस्था व्यक्त की गई। पोप को चर्च का सर्वोच्च अधिकारी और सर्वमान्य व्याख्याकार स्वीकार किया गया। सुधारात्मक उपायों में चर्च के पदों की बिक्री समाप्त कर दी गई। पादरियों को निर्देश दिये गए कि वे अपने कार्यक्षेत्र में रहकर आदर्श नैतिक जीवन बितायें। पादरियों को उचित शिक्षा देने का प्रबंध किया गया। मजहब की भाषा तो लैटिन रखी गई लेकिन लोक भाषाओं का प्रयोग करने की भी आज्ञा मिल गई। क्षमापत्रों की ब्रिकी रोक दी गई और संस्कार संबंधी कार्यो के लिए आर्थिक लाभ लेने पर प्रतिबंध लगा दिया। ऐसी पुस्तकों की भी सूची बनाई गई जो पूर्णतः या अंशतः चर्च विरोधी थीं। कुछ पुस्तकों को पूरी तरह प्रतिबंधित किया गया और कुछ के निशिद्ध अंश निकालकर पढ़ने योग्य समझा गया।

मजहबी न्यायालय (इन्क्वीजिशन न्यायालय) की स्थापना प्रोटेस्टेंटवादियों की प्रगति को रोकने तथा ढुलमुल कैथोलिकों का पता लगाकर उन्हें दण्डित करने तथा नास्तिक, मजहब विरोधियों, विद्रोही मिशनरियों को कठोरतम दण्ड दिये जाने का प्रावधान इस न्यायालय के माध्यम से किया गया। सोसाइटी ऑफ जेसस की स्थापना 1534 ई. में की गई। इस सोसाइटी की स्थापना करने वाला "इग्नेशियस लोयोला" था जो स्पेन निवासी एक बहादुर सैनिक था तथा जिसने अपना सारा जीवन कैथोलिक चर्च के लिए समर्पित कर दिया था। इस सोसाइटी के सदस्य उच्च प्रतिभा, अच्छे स्वास्थ्य, आकर्षक व्यक्तित्व वाले होते थे। इनको दो वर्ष तक प्रशिक्षण दिया जाता था। प्रशिक्षण में सफल होने पर उन्हें पादरी, डाक्टर, शिक्षक, कूटनीतिक दूत इत्यादि विशिष्ट कार्य दिया जाता था। इस संस्था के सदस्यों को अनुशासन बद्ध रहकर कैथोलिक पंथ की निःस्वार्थ सेवा करने, दीनता, पवित्रता का जीवन जीने तथा आज्ञापालन एवं पोप के प्रति समर्पण की शपथ लेनी होती थी। इस संस्था के सदस्यों को कैथोलिक ईसाई मत का प्रचार–प्रसार करने के लिए भारत, चीन, अमेरिका आदि अनेक देशों में भेजा गया।

इस प्रकार कैथोलिक प्रति सुधारवाद (कैथोलिक

काउण्टर रिफोरमेशन) ने प्रोटेस्टेंट आंधी को रोक दिया तथा ट्रेन्ट की सभा द्वारा किये गए आत्म निरीक्षण तथा लोयोला जैसे उत्साही लोगों के प्रयासों ने विरोध के स्पष्ट मुद्दे समाप्त कर दिए और व्यवस्था के अन्दर जो खोखलापन आया था उसे नए आत्मविश्वास के साथ दूर कर दिया गया।

3. **राष्ट्रीय भावना का विकास :–** रिफोरमेशन (सुधार) आन्दोलन ने राष्ट्रीय राजा की शक्ति और प्रतिष्ठा का विकास किया। राष्ट्रवादी राजाओं के कारण ही प्रोटेस्टेंट पांथिक सुधार आन्दोलन सफल हुआ। रोमन कैथोलिक चर्च अन्तर्राष्ट्रीय संस्था थी और राजाओं की सर्वोच्च सत्ता को नहीं मानती थी। प्रोटेस्टेंट आन्दोलन की सफलता ने राज्यों को अपना पंथ चुनने की स्वतन्त्रता प्रदान की और रोमन कैथोलिक पोप के आधिपत्य को समाप्त किया। राष्ट्रीय चर्चों की स्थापना हुई। प्रति सुधार के पश्चात् कैथोलिक पोप ने भी राष्ट्रीय चर्च के पादरियों की नियुक्ति का अधिकार राजाओं को दे दिया। राज्यों की शक्ति में वृद्धि के साथ ही लोगों में राष्ट्रीयता की भावना का भी विकास हुआ।
4. **मजहबी गृह युद्धों का प्रारम्भ :–** रिफोरमेशन आन्दोलन के कारण यूरोप का ईसाई मजहब दो भागों में विभाजित हो गया और इस विभाजन के कारण यूरोपीय राज्यों में गुटबन्दी पनपी जिससे परस्पर संघर्ष प्रारम्भ हो गया। इनमें हालैण्ड में मजहबी युद्व, फ्रांस में ज्विंगली के समर्थकों ने मजहबी स्वतन्त्रता हेतु युद्ध किया। जर्मनी के राज्यों में भी मजहब के नाम पर युद्ध हुए।
5. **शिक्षा का प्रचार–प्रसार :–** मजहबी सुधार आन्दोलन, के कारण सुधारवादियों ओर कैथोलिक मतानुयायियों ने शिक्षा के प्रसार पर जोर दिया। इसके अन्तर्गत सामाजिक संस्थाओं और राज्य द्वारा विद्यालय प्रारम्भ किए गए। अब प्रगतिशील तर्क आधारित, वैज्ञानिक दृष्टि कोण युक्त शिक्षा दी जाने लगी।
6. **साहित्य एवं भाषा के क्षेत्र में विकास :–** मजहबी सुधार आन्दोलन के कारण अब लैटिन भाषा के साथ–साथ प्रादेशिक भाषाओं को भी मान्यता दी गई, जिससे प्रादेशिक भाषाएँ समृद्ध हुई। जनभाषाओं के विकास के लिए अनेक मजहब शास्त्र और नीतिशास्त्र , जनभाषाओं में लिखे गए। सुधारवादियों ने अनेक साहित्यिक ग्रन्थों की रचना जनभाषाओ में की।
7. **आर्थिक विकास एवं पूंजीवादी प्रवृत्ति को प्रोत्साहन :–** तत्कालीन अर्थव्यवस्था पर मजहबी सुधार का गहरा प्रभाव पड़ा। कॉल्विनवाद ने व्यापार और वाणिज्य का समर्थन किया। सुधार आन्दोलन के पश्चात् चर्च की भूमि को कृषकों में वितरित किया गया, जिससे राज्य के राजस्व में वृद्धि हुई। चर्च के बंधन से मुक्त होकर व्यापारी पूंजी निवेश द्वारा व्यापार, वाणिज्य एवं उद्योग धन्धों का विकास करने लगे। राष्ट्रीय पूंजी में वृद्धि हुई। श्रम की महत्ता स्थापित हुई जिसका राष्ट्र के औद्योगिक विकास में उपयोग हुआ।
8. **समाज में नैतिक अनुशासन बढा :–** मजहब सुधार आन्दोलन से पूर्व नैतिकता का मापदण्ड चर्च के आदेश ही माने जाते थे। मजहबी आडम्बर विरोधी गतिविधियों ने मनुष्य को सरल, सादा, त्यागमय और नैतिकता से परिपूर्ण जीवन यापन की शिक्षा दी। प्रोटेस्टेंटवादियों ने ही ईश्वर की प्राप्ति का मार्ग विशुद्ध नैतिकता बताया। कॉल्विन के अनुयायियों ने सरल एवं सादा जीवन, वैयक्तिक नैतिक अनुशासन के आदर्श प्रस्तुत किए तो जेसुइट भी पीछे नहीं रहे।

3. औद्योगिक क्रान्ति

पुनर्जागरण और मजहबी सुधार आन्दोलन से यूरोप में बौद्धिक चिन्तन को गति मिली और इसी के परिणाम स्वरूप 18 वीं शताब्दी तक वाणिज्यवाद और औद्योगिक क्षेत्र में अभूतपूर्व क्रान्ति हुई, जो ब्रिटेन से प्रारंभ होकर सम्पूर्ण यूरोप में फैल गई। अठारहवी शताब्दी के उत्तरार्द्ध में आर्थिक और तकनीकि क्षेत्र में जो परिर्वतन आये उसके कारण घरेलू, हस्त शिल्प और हथकरघा उद्योगों का स्थान कारखाना पद्धति ने ले लिया, परिणामस्वरुप उत्पादन में अत्यधिक वृद्धि होने लगी। औद्योगिक क्रान्ति ने अर्थव्यवस्था, सामाजिक व्यवस्था के साथ–साथ राजनैतिक व्यवस्था को भी प्रभावित किया। औद्योगिक क्रान्ति पूर्व नियोजित या ब्रिटेन की अर्थ नीति के कारण नहीं थी बल्कि कुछ विशेष परिस्थितियों की देन थी। जब मांग में वृद्धि हुई तो उस की पूर्ति करने के लिए उत्पादन में वृद्धि करने हेतु मशीनों का आविष्कार और प्रयोग तीव्र गति से हुआ।

जब उत्पादन हुआ तो अतिरिक्त उत्पादन को खपाने के लिए विदेशी बाजारों की खोज हुई अतः विदेशी व्यापार में वृद्धि हुई। उत्पादक देशों के लोगों की आर्थिक आय में वृद्धि हुई। इस प्रकार औद्योगिक क्रान्ति ने मनुष्य के जीवन को भी परिवर्तित किया।

औद्योगिक क्रान्ति का अर्थ :– 'औद्योगिक क्रान्ति' शब्द का प्रयोग यूरोपीय विद्वानों फ्रांस के जार्जिस मिशले और जर्मनी के फ्राइड्रिक एंजेन्म द्वारा किया गया। अंग्रेजी में इस शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम दार्शनिक और अर्थशास्त्री अरनॉल्ड टॉयनबी द्वारा उन परिवर्तनों का वर्णन करने के लिए किया गया जो ब्रिटेन के औद्योगिक विकास में 1760 ई. से 1820 ई. के बीच हुए थे। उन्होंने अपनी पुस्तक 'लेक्चर्स ऑन इण्डस्ट्रियल रिवोल्यूशन इन इग्लैण्ड' में औद्योगिक क्रान्ति को स्पष्ट करते हुए लिखा कि यह कोई आकस्मिक घटना नहीं थी।

इस का सूत्रपात शताब्दियों पूर्व हुआ जो क्रमशः अपनी गति से चलती रही और आज भी चल रही है। इतिहासकार जी. डब्लू.साउथगेट के अनुसार औद्योगिक क्रान्ति, औद्योगिक प्रणाली में परिवर्तन था जिसमें हस्त शिल्प के स्थान पर शक्ति संचालित यंत्रो से काम लिया जाने लगा तथा औद्योगिक संगठन में परिवर्तन हुआ। घरों में उद्योग चलाने की अपेक्षा कारखानों में काम होने लगा। इतिहासकार सी. डी. हेजन का मत है कि कुटीर उद्योग का मशीनीकरण औद्योगिक क्रान्ति है। डेविज के अनुसार औद्योगिक क्रान्ति का तात्पर्य उन परिवर्तनों से है जिन्होंने यह सम्भव कर दिया था कि मनुष्य उत्पादन के प्राचीन उपायों को त्याग कर विस्तृत रूप से कारखानों में वस्तुओं का उत्पादन कर सके। एन्साइक्लोपीडिया ऑफ सोशल साइंसेज खण्ड आठ के अनुसार "आर्थिक और तकनीकि विकास जो अठारहवीं शताब्दी में अधिक सशक्त और तीव्र हो गया था, जिसके फलस्वरूप आधुनिक उद्योगवाद का जन्म हुआ जिसे औद्योगिक क्रान्ति कहा जाता है।

औद्योगिक क्रान्ति का अर्थ उस आर्थिक व्यवस्था से है जो परम्परागत कम उत्पादन और विकास की निम्न अवस्था से निकलकर आधुनिक औद्योगिक क्षेत्र में प्रविष्ट होती है, जिससे अधिक उत्पादन, जीवन का रहन–सहन और प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि होती है और उत्पादन दर निरन्तर बढती रहती है, जिसका मनुष्य, समाज और राज्य पर व्यापक प्रभाव पडा।

औद्योगिक क्रान्ति से ब्रिटेन में हुए परिवर्तन :–

1. उत्पादन संबंधी कार्य जो पहले हाथ से किये जाते थे वे अब मशीनों से किये जाने लगे।
2. मशीनों के संचालन हेतु जलशक्ति के स्थान पर वाष्प शक्ति, खनिज तेल तथा विद्युत शक्ति का प्रयोग किया जाने लगा।
3. इस्पात की मांग की पूर्ति के लिए इस्पात के कारखाने खोले गए।
4. कृषि का व्यवसायीकरण किया गया । कृषि कार्य में मशीनों का प्रयोग किया जाने लगा।
5. पूँजी का उपयोग बढ़ा और बैंकिग पद्वति का विकास हुआ।
6. कम मानव श्रम एवं अधिकतम उत्पादन के सिद्धान्त को अपनाया गया।
7. अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में वृद्वि हेतु संगठित व्यापार तंत्र विकसित किया गया ।
8. यातायात के त्वरित विकास के लिए रेल इंजन और यन्त्र चालित जहाजों में आमूल परिवर्तन किया गया।

औद्योगिक क्रान्ति का इग्लैण्ड में आरम्भ :–

इंग्लैण्ड पहला देश था जहाँ सबसे पहले आधुनिक औद्योगीकरण का अनुभव किया गया। यूरोप के अन्य देशों की अपेक्षा ब्रिटेन में अनेक ऐसी परिस्थितियाँ थी जिन्होंने वहाँ औद्योगिक क्रान्ति आरम्भ की।

1. लोहे एवं कोयले की खानो का पास – पास होना।
2. इंग्लैण्ड के पास विस्तृत औपनिवेशिक साम्राज्य।
3. मांग के अनुरूप उत्पादन की व्यवस्था।
4. जनसंख्या वृद्धि।
5. बाजार व्यवस्था में स्थानीय प्राधिकरणो का हस्तक्षेप नहीं होना।
6. पूँजी की उपलब्धता प्रचुर मात्रा में होना व बैंकिग प्रणाली स्थापित होना।
7. व्यापारी वर्ग का प्रभावी होना।
8. इंग्लैण्ड की अनुकूल भौगोलिक स्थित।
9. राजनैतिक स्थायित्व एवं सुशासन का होना।
10. वैज्ञानिक अविष्कारों को प्रोत्साहन देना।

11. कृषि क्रान्ति का होना।

औद्योगिक क्रान्ति के कारण विभिन्न क्षेत्रों में हुए परिवर्तन –

1. कृषि क्षेत्र में :–यह माना जाता है कि कृषि क्रान्ति के बिना औद्योगिक क्रान्ति सम्भव नहीं थी। सत्रहवीं शताब्दी तक कृषि क्षेत्र में सामान्यतः पुरानी पद्धति को ही काम में लिया जाता था कृषि की तकनीकि में परिवर्तन नहीं होने का कारण यह था कि कृषि जन्य वस्तुओं की मांग राज्य की खपत से अधिक नहीं थी। लेकिन जैसे ही उद्योगों का विस्तार हुआ नगरों की आबादी बढ़ी, त्यों ही गाँव के किसानों को शहरों में रहने वालों के लिए अधिक अन्न और कारखानों के लिए अधिक कच्चा माल उत्पादन करना पड़ा। जब कृषि जन्य वस्तुओं की मांग अधिक बढी तो कृषि उत्पादन उसी अनुपात में बढ़ाने के लिए कृषि उपयोगी मशीनों की आवश्यकता हुई।

दूसरा कारण अब लोग मुनाफे के लिए खेतों में पूँजी लगा रहे थे। कृषि के क्षेत्र में पूँजी के प्रयोगों ने कृषि क्रान्ति की। सर्वप्रथम यार्कशायर के जमीदार जेर्थोटल ने बीज बोने की मशीन (ड्रिल मशीन) बनाई, जिससे बीज बोने का कार्य अधिक व्यवस्थित तथा सुचारू रूप से होने लगा। टाउनशैड ने फसल चक्र का सिद्धान्त दिया जिसमें फसलों को अदल बदलकर बोने से भूमि की उर्वरा शक्ति बनाई रखी जा सकती थी, अब परती छोड़ने की आवश्यकता नहीं रही तथा प्रति एकड़ फसल उत्पादन अधिक हो गया। 1770 ई. के आस पास राबर्ट बैकबैल ने कृषि के साथ–साथ पशुपालन को एक लाभदायक व्यवसाय बना दिया। इंग्लैण्ड के किसान आर्थर यंग ने नई खेती का प्रसार किया, जिनमें वह छोटे खुले खेतों को मिलाकर बड़े– बड़े कृषि फार्म और बड़े फार्मो के लाभों के बारे में बताया और अपने विचारों के प्रसार के लिए "एनल्स ऑफ एग्रीकल्चर" नामक पत्रिका शुरु की। 1793 ई. में अमेरीका निवासी विह्टन ने अनाज को भूसे से अलग करने की मशीन तथा 1834 ई. में साइरस के एच. मैक कोरनिक ने फसल काटने वाली मशीन का आविष्कार किया।

2. वस्त्र उद्योग में परिवर्तन :– औद्योगिक क्रान्ति वस्त्र उद्योग से शुरु हुई थी। 18वीं शताब्दी के मध्य तक यूरोप के उद्योग में वस्त्र बनाने की प्राचीन प्रणाली वस्त्रों की मांग को पूरा करने में असमर्थ थी। इंग्लैण्ड में पहले सूती कपड़े भारत से आयात किये जाते थे। लेकिन जब भारत के कई हिस्सों पर ईस्ट इण्डिया कम्पनी का राजनीतिक नियंत्रण स्थापित हो गया तब इंग्लैण्ड ने कपड़े के साथ–साथ कपास का आयात करना भी प्रारम्भ कर दिया। इस प्रकार कपास की धुनाई से वस्त्र निर्माण तक समस्त कार्य वहीं होने लगे। यूरोप में वस्त्रों की बढ़ती मांग को पुराने तरीके से पूरा नहीं किया जा सकता था। 1733 ई. में जॉन नामक बुनकर ने फ्लाइंग शटल की खोज की जिस से कपड़े बुनने में तेजी आई। 1764 ई. में जेम्स हार ग्रीब्स ने "स्पिनिंग जेनी" का आविष्कार किया जिससे एक साथ सूत के आठ धागे काटे जा सकते थे। 1764 ई. में रिचर्ड आर्कराइट ने स्पिनिंग जेनी में सुधार करके जल शक्ति से चलने वाली "वाटर फ्रेम" नामक सूत कातने की मशीन बनाई।

3. लौह उद्योग में नये तकनीकी परिवर्तन :– नई–नई मशीनें बनाने के लिए लोहे की मांग बढ़ी। पुरानी पद्धति से इस मांग की पूर्ति नहीं की जा सकती थी। यह पुरानी पद्धति श्रमसाध्य एवं महँगी थी। अतः लौह अयस्क को शुद्ध करने के लिए विभिन्न विधियों की खोज की जाने लगी। 1709 ई. में अब्राहम डर्बी द्वारा धमन भट्टी का अविष्कार किया जिसमें सर्वप्रथम कोक (पत्थर का कोयला) का प्रयोग किया गया। जिसमें लौह अयस्क को पिघलाने और साफ करने का कार्य सुगम हो गया। इस आविष्कार ने धातु कर्म उद्योग मे क्रान्ति ला दी। द्वितीय डर्बी (1711–68 ई.) ने ढलवाँ लोहे से पिटवाँ लोहे का विकास किया, जो कम भंगुर था। हेनरी कोर्ट (1740–1823 ई.) ने आलोडन भट्टी की ऐसी विधि का आविष्कार किया जिसके द्वारा शुद्ध और अच्छा लोहा बनाना संम्भव हुआ। लोहे से बनी मशीनें काफी वजनदार होती थीं और उसमें जंग भी लग जाता था। इस समस्या से छुटकारा दिलाने के लिए इस्पात की खोज की गई। इस्पात बनाने के लिए लोहे को शुद्ध करके उसमें कुछ मात्रा में कार्बन, मैगनीज तथा अन्य पदार्थो को मिला कर तैयार किया जाता, जो अपेक्षाकृत हल्का मजबूत, जंगरोधी और लचकादार होता था। 1856 ई. से पूर्व इस्पात बनाने कि विधि काफी महँगी थी। हेनरी बेस्सेमर ने इस्पात बनाने कि एक विधि खोजी जिसमें जल्दी और सस्ता इस्पात

तैयार होने लगा। यह विधि बेसेमर प्रक्रिया नाम से प्रसिद्ध हुई। इस विधि से ढलवाँ लोहे से सीधा इस्पात तैयार किया जाता था। ब्रिटेन के लौह अयस्क उद्योग में इतना परिवर्तन हुआ कि 1800 ई. से 1830 ई. के दौरान अपने लौह उत्पादन को चौगुना बढा लिया। 1820 ई. में जहाँ एक टन ढलवाँ लोहा बनाने के लिए आठ टन कोयले की आवश्यकता होती थी, 1850 ई. तक आते–आते यह दो टन तक ही रह गई।

4. भाप की शक्ति के आविष्कार से परिवर्तनः– जब नई मशीनों की खोज हुई तो इन्हें चलाने के लिए शक्ति के नये स्रोतों की आवश्यकता हुई। अभी तक जल और पवन शक्ति का प्रयोग किया जाता था, लेकिन इसकी सीमाएँ थी। भाप शक्ति का उपयोग सर्वप्रथम खनन उद्योगों में किया गया। खानों में पानी भरने की गम्भीर समस्या थी, इसी समस्या से मुक्ति पाने के लिए 1712 ई. में टामसन न्यूकोमेन ने एक वाष्प इंजन का अविष्कार किया किंतु इस इंजन में उर्जा खपत अधिक थी तथा गहराई से पानी निकालना सम्भव नहीं था। जैम्सवाट ने 1769 ई. में न्यकोमेन के वाष्प इंजन के दोषों को दूर कर, कम खर्चीला तथा अधिक उपयोगी वाष्प इंजन बनाया। जिससे कारखानों में शक्ति चालित उर्जा मिलने लगी।

5. नवीन तकनीक से परिवहन के साधनों में परिवर्तनः– बढ़ते व्यापार एवं उद्योग के कारण परिवहन के साधनों में सुधार की आवश्यकता हुई। परिवहन को आसान और सस्ता बनाने के लिए स्कॉटलैण्ड वासी मकाडम ने सड़क निर्माण का एक नया तरीका निकाला जिसमें सड़क के निचले भाग में भारी पत्थरों की परत उसके बाद छोटे–छोटे पत्थरों की परत और उसके बाद मिट्टी बिछायी जाती थी।

भारी सामान के परिवहन को सस्ता करने के लिए ब्रिटेन ने नहरों का निर्माण कराया। इंग्लैण्ड में पहली नहर वर्सली कैनाल, 1761 ई. में जैम्स ब्रिंडली द्वारा बनाई गई। इससे माल ढोने का खर्चा आधा रह गया। 1788 ई. से 1796 ई. तक का काल "नहरोन्माद" के नाम से पुकारा जाने लगा। इस अवधि में 46 परियोजनाएँ हाथ में ली गई थी। 1869 ई. में फ्रांसिसी इंजिनियर फर्दिनांद द लैस्सैप ने स्वेज नहर, जो भूमध्य सागर और लाल सागर को मिलाती है, का निर्माण कराया, जिससे यूरोप और भारत के मध्य की दूरी एक तिहाई कम हो गई।

भाप से चलने वाला रेल इंजन "स्टीफेनम का राकेट" 1814 ई. में बना, इसी के साथ रेल गाडियाँ, परिवहन का एक ऐसा साधन बन गई, जो वर्ष भर उपलब्ध रहती थी। 1801 ई. में रिचर्ड ट्रेविथिक ने एक इंजन का निर्माण किया जिसे पफिंग डेविल अर्थात् "फुफकारने वाला दानव" कहते थे। 1814 ई. में रेल्वे इंजिनियर जॉर्ज स्टीफेन्स ने रेल इंजन बनाया जिसे ब्लचर कहा जाता था। यह इंजन 30 टन भार को 4 मील प्रति घंटे की रफ्तार से एक पहाड़ी पर ले जा सकता था। रेल गाड़ी द्वारा सर्वप्रथम 1825 ई. में स्टॉकटन और डार्लिंगटन शहरों के बीच 9 मील लम्बा रेलमार्ग 24 किलोमीटर प्रतिघंटा की रफ्तार से 2 घंटे में तय किया गया। 1830 ई. में लिवरपूल और मैनचैस्टर को आपस में रेलमार्ग द्वारा जोड़ा गया। रेल के आविष्कार ने कोयला, लोहा एवं अन्य औद्योगिक उत्पादों को कम समय में और कम खर्च में लाना, ले जाना संभव बना दिया।

औद्योगिक क्रान्ति के परिणाम

विलडूंरा ने लिखा है कि मानव इतिहास में दो प्रसिद्ध क्रांतियाँ हुई हैं जिन्होंने मानव इतिहास को सर्वाधिक प्रभावित किया, एक तो जब मनुष्य ने पाषाण युग में आखेट छोड़कर कृशि को प्रमुख पेशा बनाया, दूसरी 18 वीं शताब्दी में जब मनुष्य ने कृषि को छोड़कर उद्योग को प्रमुख पेशा बनाया। औद्योगिक क्रान्ति के इन परिणामों को चार प्रमुख शीर्षकों में बाँट सकते हैं :–

1. आर्थिक परिणामः–

(1) उत्पादन एवं वाणिज्य में असाधारण वृद्वि
(2) आर्थिक संतुलन
(3) नगरों का विकास
(4) कुटीर उद्योगों का विनाश।
(5) बैंक व मुद्रा का विकास
(6) राष्ट्रीय बाजारों का संरक्षण
(7) औद्योगिक पूँजीवाद का विकास

2. सामाजिक परिणामः–

(1) नैतिक मूल्यों में गिरावट
(2) संयुक्त परिवार प्रथा में बिखराव
(3) नये सामाजिक वर्ग का उदय
(4) मानवीय संबंधों में गिरावट
(5) गन्दी बस्तियों की समस्या
(5) नयी संस्कृति का जन्म

(6) जनसंख्या में वृद्धि

3. **राजनैतिक परिणामः—**

(1) राजनीति में लोक तन्त्र की मांग

(2) औपनिवेशिक प्रतिस्पर्धा की शुरूआत

(3) मध्यम वर्ग की राजनीतिक महत्वाकाँक्षाओं का उदय

(4) श्रमिक आन्दोलन का उदय

4. **वैचारिक परिणामः—**

(1) आर्थिक उदारवाद का स्वागत

(2) समाजवाद का उदय।

अभ्यासार्थ प्रश्न

अति लघुरात्मक प्रश्न (दो पंक्तियों में उत्तर दिजिए) :—

1. पुनर्जागरण से क्या आशय है?
2. कुस्तुन्तुनिया के पतन के दो महत्वपूर्ण परिणाम बताईये।
3. मानवतावाद का जनक किसे कहा जाता है?
4. पुनर्जागरण कालीन तीन मूर्तिकारों के नाम बताईये।
5. दी मोर्निंग स्टार ऑफ रिफोरमेंशन किसे कहा जाता है?
6. मार्टिन लूथर द्वारा लिखित तीन परिपत्रों के नाम बताइये।
7. आक्सबर्ग आन्दोलन की स्वीकृति क्या है?
8. रिफोरमेशन आन्दोलन में अक्टूबर 1517 ई. का एतिहासिक महत्व बताईये।
9. सर्वप्रथम औद्योगिक क्रान्ति किस देश में हुई?
10. कृषि में हुए किन्हीं दो आविष्कारों को लिखिए।
11. फर्दिनांद द लैस्सैप कौन था?

लघुत्तरात्मक प्रश्न (आठ पंक्तियों में उत्तर दीजिये)

1. पुनर्जागरण से क्या अभिप्राय है?
2. पुनर्जागरण के पाँच कारण लिखिए।
3. मानवतावाद क्या है ? स्पष्ट कीजिए।
4. पुनर्जागरण का केन्द्र इटली ही क्यों बना?
5. रिफोरमेशन के तत्कालीन कारण क्या थे?
6. प्रति सुधार आन्दोलन क्या था स्पष्ट कीजिए?
7. कॉल्विन का संक्षिप परिचय दीजिये।
8. धार्मिक न्यायालय पर टिप्पणी कीजिए।
9. यूरोप में औद्योगिक क्रान्ति के पाँच कारक लिखिए।
10. औद्योगिक क्रान्ति के समय वस्त्र उद्योग में हुए आविष्कारों का उल्लेख कीजिए।
11. औद्योगिक क्रान्ति के समय लौह उद्योग में आविष्कारों से क्या परिवर्तन हुआ?

निबन्धात्मक प्रश्न (अधिकतम पाँच पृष्ठों में उत्तर दीजिए)

1. पुनर्जागरण के कारण और परिणाम बताईये।
2. रिफोरमेशन आन्दोलन में मार्टिन लूथर की भूमिका का वर्णन कीजिए।
3. रिफोरमेशन आन्दोलन ने यूरोप को किस प्रकार प्रभावित किया?
4. औद्योगिक क्रान्ति के कारण विभिन्न क्षेत्रों में हुए परिवर्तनों का उल्लेख कीजिए।